कर्नाटक सर्कार

सरकारी हाईस्कूल एस.आर.कालोनी बल्लारी 583101

विद्यागम निरंतर सीखने का कार्यक्रमका विवरण।

टिप्पणी : - मान्य अधीक्षक लेटर सं:स.शि.का / विद्यागमा.आ/13497 / 2020 - 21, द: दिनांक 04-08-2020

इसके अनुसार

अध्यापक का नाम: महबूब भाषा. एम

सरकारि हाई स्कूल एस.आर.कॉलोनी

बेल्लारी पूर्व क्षेत्र बल्लारी- 583101

मोबैल-9739458747

सरकारी हाईस्कूल एस.आर.कालोनी बल्लारी 583101

अनुक्रमणिका

क्र.सं	विषय
01	वर्णमाला
02	बारहखड़ी
03	गिनती
04	संज्ञा
05	सर्वनाम
06	विशिषण
07	क्रिया
08	लिंग
09	वचन
10	विलोम शब्द
11	कारक
12	संधि
13	समास
14	विराम चिह्न
15	मुहावरे
16	पत्र लेखन
17	निबंध
18	अनुवाद
19	प्रश्न पत्र (नैदानिक परीक्षा)
20	प्रश्न पत्र (साफ़ल्य परीक्षा)

हिन्दी वर्णमाला

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं अः

व्यंजन :-

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण (ड़, ढ़)

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

क्ष त्र ज्ञ

वर्णमाला से संबंधित यूट्यूब लिंक्स

01 https://youtu.be/gsYkXxNo0DM

02 https://youtu.be/8AabA8Z8z3g

03 https://youtu.be/sd25aYDaXLY

04 https://youtu.be/ZH6Y1-sp75k

05 https://youtu.be/F2-JDbCXJI4

बारहखड़ी

क का कि की कु कू के कै को कौ कं क

ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः

ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः

घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः

च चा चि ची चु चू चे चै चो चौ चं चः

छ छा छि छी छु छू छे छै छो छौ छं छः

ज- जा जि जी जु जू जे जै जो जौ जं जः

झ- झा- झि- झी- झु- झू- झे- झै- झो- झौ- झं- झः

ट- टा- टि- टी- टु- टू- टे- टै- टो- टौ- टं- टः

ठ- ठा- ठि- ठी- ठु- ठू- ठे- ठै- ठो- ठौ- ठं- ठः

ड- डा- डि- डी- डु- डू- डे- डै- डो- डौ- डं- डः

ढ- ढा- ढि- ढी- ढु- ढू- ढे- ढै- ढो- ढौ- ढं- ढः

ण- णा- णि- णी- णु- णू- णे- णै- णो- णौ- णं- णः

त- ता- ति- ती- तु- तू- ते- तै- तो- तौ- तं- तः

थ- था थि- थी- थु- थू- थे- थै थो- थौ- थं- थः

द- दा दि- दी- दु- दू- दे- दै दो- दौ- दं- दः

ध- धा धि- धी- धु- धू- धे- धै धो- धौ- धं- धः

न- ना नि- नी- नु- नू- ने- नै नो- नौ- नं- नः

प- पा पि- पी- पु- पू- पे- पै पो- पौ- पं- पः

फ- फा फि- फी- फु- फू- फे- फै फो- फौ- फं- फः

ब- बा बि- बी- बु- बू- बे- बै- बो- बौ- बं- बः

भ- भा- भि- भी- भु- भू-भे- भै- भो- भौ- भं- भः

म- मा- मि- मी- मु- मू- मे- मै- मो- मौ- मं- मः

य- या- यि- यी- यु- यू-ये- यै- यो- यौ- यं- यः

र- रा- रि- री- रु- रू- रे- रै- रो- रौ- रं- रः

ल- ला- लि- ली- लु- लू- ले- लै- लो- लौ- लं- लः

व- वा- वि- वी- वु- वू- वे- वै- वो- वौ- वं- वः

श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष-	क्षा-	क्षि-	क्षी-	क्षु-	क्षू-	क्षे	क्षै-	क्षो-	क्षौ-	क्षं-	क्षः
ज्ञ-	ज्ञा-	ज्ञि-	ज्ञी-	ज्ञु-	ज्ञू-	ज्ञे-	ज्ञै-	ज्ञो-	ज्ञौ-	ज्ञं-	ज्ञः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः

बारहखड़ी से संबंधित यूट्यूब लिंक्स

01 https://www.youtube.com/watch?v=vt0O19OLqZw

02 https://www.youtube.com/watch?v=wT4EN1nVB8c

03 https://www.youtube.com/watch?v=7Vw6bKuCOF8

04 https://www.youtube.com/watch?v=xH6PHTvvJl4

05 https://www.youtube.com/watch?v=rSwmWq0Vb6I

गिनती

Number in English	Hindi Numbers or Numerals	Hindi Numbers Name in Hindi Font and Pronunciation Sense	Numbers in English Words
1	१	एक (ek)	One
2	२	दो (do)	Two
3	३	तीन (teen)	Three
4	४	चार (cāra)	Four
5	५	पांच (pāṃca)	Five
6	६	छः (chaḥ)	Six
7	७	सात (sāta)	Seven
8	८	आठ (āṭha)	Eight
9	९	नौ (nau)	Nine
10	१०	दस (dasa)	Ten
11	११	ग्यारह (gyāraha)	Eleven
12	१२	बारह (bāraha)	Twelve
13	१३	तेरह (tēraha)	Thirteen
14	१४	चौदह (caudaha)	fourteen
15	१५	पंद्रह (paṃdraha)	Fifteen
16	१६	सोलह (solaha)	Sixteen
17	१७	सत्रह (satraha)	seventeen
18	१८	अट्ठारह (aṭṭhāraha)	eighteen
19	१९	उन्निस (unnisa)	nineteen
20	२०	बीस (bīsa)	Twenty

21	२१	इक्कीस (ikkīsa)	twenty-one
22	२२	बाईस (bāīsa)	twenty-two
23	२३	तेईस (tēīsa)	twenty-three
24	२४	चौबीस (chaubīsa)	twenty-four
25	२५	पच्चीस (paccīsa)	twenty-five
26	२६	छब्बीस (chabbīsa)	twenty-six
27	२७	सत्ताईस (sattāīsa)	twenty-seven
28	२८	अट्ठाईस (aṭṭhāīsa)	twenty-eight
29	२९	उनतीस (unatīsa)	twenty-nine
30	३०	तीस (tīsa)	thirty
31	३१	इकतीस (ikatīsa)	thirty-one
32	३२	बत्तीस (battīsa)	thirty-two
33	३३	तैंतीस (taiṃtīsa)	thirty-three
34	३४	चौंतीस (cauṃtīsa)	thirty-four
35	३५	पैंतीस (paiṃtīsa)	thirty-five
36	३६	छत्तीस (chattīsa)	thirty-six
37	३७	सैंतीस (saiṃtīsa)	thirty-seven
38	३८	अड़तीस (aṛatīsa)	thirty-eight
39	३९	उनतालीस (unatālīsa)	thirty-nine
40	४०	चालीस (cālīsa)	forty
41	४१	इकतालीस (ikatālīsa)	forty-one
42	४२	बयालीस (bayālīsa)	forty-two
43	४३	तैंतालीस (taiṃtālīsa)	forty-three
44	४४	चौंतालीस (cauṃtālīsa)	forty-four

45	४५	पैंतालीस (paiṃtālīsa)	forty-five
46	४६	छियालीस (chiyālīsa)	forty-six
47	४७	सैंतालीस (saiṃtālīsa)	forty-seven
48	४८	अड़तालीस (aṛatālīsa)	forty-eight
49	४९	उनचास (unacāsa)	forty-nine
50	५०	पचास (pacāsa)	fifty
51	५१	इक्याबन (ikyābana)	fifty-one
52	५२	बावन (bāvana)	fifty-two
53	५३	तिरेपन (tirēpana)	fifty-three
54	५४	चौबन (caubana)	fifty-four
55	५५	पचपन (pacapana)	fifty-five
56	५६	छप्पन (chappana)	fifty-six
57	५७	सत्तावन (sattāvana)	fifty-seven
58	५८	अट्ठावन (aṭṭhāvana)	fifty-eight
59	५९	उनसठ (unasaṭha)	fifty-nine
60	६०	साठ (sāṭha)	sixty
61	६१	इकसठ (ikasaṭha)	sixty-one
62	६२	बासठ (bāsaṭha)	sixty-two
63	६३	तिरसठ (tirasaṭha)	sixty-three
64	६४	चौंसठ (cauṃsaṭha)	sixty-four
65	६५	पैंसठ (paiṃsaṭha)	sixty-five
66	६६	छियासठ (chiyāsaṭha)	sixty-six
67	६७	सड़सठ (saṛasaṭha)	sixty-seven
68	६८	अड़सठ (aṛasaṭha)	sixty-eight

69	६९	उनहत्तर (unahattara)	sixty-nine
70	७०	सत्तर (sattara)	seventy
71	७१	इकहत्तर (ikahattara)	seventy-one
72	७२	बहत्तर (bahattara)	seventy-two
73	७३	तिहत्तर (tihattara)	seventy-three
74	७४	चौहत्तर (cauhattara)	seventy-four
75	७५	पचहत्तर (pacahattara)	seventy-five
76	७६	छिहत्तर (chihattara)	seventy-six
77	७७	सतहत्तर (satahattara)	seventy-seven
78	७८	अठहत्तर (aṭhahattara)	seventy-eight
79	७९	उनासी (unāsī)	seventy-nine
80	८०	अस्सी (assī)	eighty
81	८१	इक्यासी (ikyāsī)	eighty-one
82	८२	बयासी (bayāsī)	eighty-two
83	८३	तिरासी (tirāsī)	eighty-three
84	८४	चौरासी (caurāsī)	eighty-four
85	८५	पचासी (pacāsī)	eighty-five
86	८६	छियासी (chiyāsī)	eighty-six
87	८७	सतासी (satāsī)	eighty-seven
88	८८	अठासी (aṭhāsī)	eighty-eight
89	८९	नवासी (navāsī)	eighty-nine
90	९०	नब्बे (nabbē)	ninety
91	९१	इक्यानबे (ikyānabē)	ninety-one
92	९२	बानवे (bānavē)	ninety-two

93	९३	तिरानवे (tirānavē)	ninety-three
94	९४	चौरानवे (caurānavē)	ninety-four
95	९५	पचानवे (pacānavē)	ninety-five
96	९६	छियानवे (chiyānavē)	ninety-six
97	९७	सत्तानवे (sattānavē)	ninety-seven
98	९८	अट्ठानवे (aṭṭhānavē)	ninety-eight
99	९९	निन्यानवे (ninyānavē)	ninety-nine
100	१००	(एक) सौ (ēka sau)	hundred

संज्ञा

सम्पूर्ण संज्ञा अंग भेद उदहारण सरल परीक्षा में उपयोगी। हम आपको इस विषय पर पूरी जानकारी देने जा रहे हैं | अगर आपके मन में कोई भी सवाल आये तो आप बेधड़क नीचे कमेंट करके पूछ सकते हैं | हम आप तक जरूर पहुंचेंगे |

संज्ञा के भेद परिभाषा और उदाहरण

" श्याम " खाना खा रहा है = श्याम व्यक्ति का नाम है।

" अमरुद " में मिठास है = अमरूद फल का नाम है।

" घोडा " दौड़ रहा है = घोड़ा एक पशु का नाम है।

संज्ञा किसे कहते है ?

किसी व्यक्ति (प्राणी) वस्तु , स्थान , अथवा भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते है। जैसे – श्याम , दिल्ली , आम , मिठास , गाय आदि।

संज्ञा के कितने भेद है ?

इस के तीन भेद है – व्यक्तिवाचक , जातिवाचक , भाववाचक संज्ञा।

1 व्यक्तिवाचक संज्ञा (PROPERNOUN) (Vyakti vachak sangya) –

वह शब्द जो किसी एक व्यक्ति , वस्तु , स्थान आदि का बोध करवाता है उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते है।

जैसे –

राम – व्यक्ति का नाम है

श्याम – व्यक्ति का नाम है

टेबल – बैठक का एक साधन है किन्तु एक नाम को सूचित कर रहा है इसलिए यह व्यक्तिवाचक है।

कुर्सी – बैठक का एक साधन है किन्तु एक नाम को सूचित कर रहा है इसलिए यह व्यक्तिवाचक है।

कार – यातायात का एक साधन है , किन्तु सम्पूर्ण यातायात नहीं है कार एक माध्यम है।इसके कारन यह एक व्यक्ति को इंगित कर रहा है।

दिल्ली – एक राज्य है किन्तु पूरा देश नहीं इसलिए यह व्यक्तिवाचक है।

मुंम्बई – एक राज्य है किन्तु पूरा देश नहीं इसलिए यह व्यक्तिवाचक है।

2 जातिवाचक संज्ञा (COMMON NOUN) (Jaati vachak sangya) –

जो शब्द संज्ञा किसी जाति , का बोध करवाता है वह जातिवाचक संज्ञा कहलाता है। जैसे –

लड़का , लड़की , नदी , पर्वत आदि।

=> जातिवाचक संज्ञा के दो भेद है १ द्रव्यवाचक संज्ञा २ समूह वाचक संज्ञा।

01 द्रव्यवाचक संज्ञा (MATERIAL NOUN) (Dravya vachak sangya) –

जिस संज्ञा शब्दों से किसी धातु , द्रव्य , सामग्री , पदार्थ आदि का बोध हो , उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते है। जैसे –

गेहूं – भोजन की सामाग्री है।

चवल – भोजन की सामाग्री है।

घी – भोजन की सामाग्री है।

सोना – आभूषण के लिए एक द्रव्य या पदार्थ है।

चांदी – आभूषण के लिए एक पदार्थ है।

तांबा – एक धातु है। ऊन – ऊन वस्त्र बनाने की एक सामाग्री है।

02. समूह वाचक संज्ञा (COLLECTIVE NOUN) (Samooh vachak sangya) –

जिन संज्ञा शब्दों से किसी एक व्यक्ति का बोध न होकर पुरे समूह / समाज का बोध हो वह समूह वाचक / समुदायवाचक संज्ञा होता है। जैसे –

सेना – सेना में कई सैनिक होते है। यहाँ समूह की बात हो रही है।

पुलिस – पुलिस हर स्थान , राज्य , देश में होते है। उसी बड़े रूप को इंगित किया जा रहा है।

पुस्तकालय – पुस्तकालय में अनेक पुस्तक होते है। यहाँ किसी एक पुस्तक की बात नहीं हो रही है।

दल – अनेक व्यक्तिों से मिलकर एक दल , या समूह का निर्माण होता है।

समिति – अनेक व्यक्तिों से मिलकर एक समिति , या समूह का निर्माण होता है।

आयोग – आयोग का गठन किसी खास उद्देश्य के लिए किया जाता है , इसमें अनेक सदस्य होते है।

परिवार – एक परिवार में अनेक सदस्य हो सकते है यहाँ तक की 2 -3 पीढ़ी भी।

3 भाववाचक संज्ञा (ABSTRACT NOUN) (Bhav vachak sangya) –

जिन संज्ञा शब्दों से पदार्थों की अवस्था , गुण – दोष , धर्म , दशा , आदि का बोध हो वह भाववाचक संज्ञा कहलाता है। जैसे–

बुढ़ापा – बुढ़ापा जीवन की एक अवस्था है।

मिठास – मिठास मिठाई का गुण है।

क्रोध – क्रोध एक भाव या दशा है।

हर्ष – हर्ष एक भाव या दशा है।

यौवन – यौवन स्त्री की एक दशा है।

बालपन – बालपन बालक का गुण है अथवा एक दशा और अवस्था है।

मोटापा – मोटापा एक अवस्था है जो मोटापे का इंगित करता है।

संज्ञा की पहचान क्या है ? (Sangya ki pehchan kya hai)

कुछ संज्ञा शब्द प्राणीवाचक होता है , तो कुछ शब्द अप्राणिवाचक। कुछ शब्द गणनीय होती है तो कुछ शब्द अगणनीय।

01 प्राणीवाचक sangya –

वह शब्द जिससे किसे सजीव वस्तु का बोध हो जिसमे प्राण हो उसे प्राणीवाचक संज्ञा कहते है जैसे – लड़का,गाय,रमेश

चिड़िया आदि उपरोक्त सभी में प्राण है इस कारण यह प्राणीवाचक संज्ञा कहलाता है।

02 अप्राणिवाचक sangya –

जिस वस्तु , में प्राण न हो वह अप्राणिवाचक संज्ञा कहलाता है जैसे –

मेज,रेलगाडी,मकान,पुस्तक,पर्वत

उपरोक्त शब्दों में प्राण / या सजीव नहीं है। इसलिए यह अप्राणिवाचक संज्ञा है।

03 गणनीय sangya –

जिस व्यक्ति , वस्तु , पदार्थ आदि की गणना की जा सकती है। उसकी सांख्या ज्ञात की जा सकती है वह शब्द गणनीय sangya कहलायेगा। जैसे –

लड़का,पुस्तक,भवन,गाय,केले

04 अगणनीय sangya –

जिस व्यक्ति , वस्तु , पदार्थ आदि की गणना नहीं की जा सकती है। उसकी सांख्या ज्ञात नहीं की जा सकती है वह शब्द अगणनीय संज्ञा कहलायेगा। जैसे –

दूध,पानी,हवा,मित्रता आदि

संज्ञा से संबंधित यूटूब लिंक्स

01 https://youtu.be/r3Yy0B__np8

02 https://youtu.be/YgVqeQURn9Y

03 https://youtu.be/en3s69EEOPc

04 https://youtu.be/jzJ6h2mtahY

05 https://youtu.be/Cia9_BtCAO8

सर्वनाम की परिभाषा:

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त वाले शब्दों को सर्वनाम कहा जाता है। सर्वनाम संज्ञाओं की पुनरावृति रोककर वाक्यों को सौंदर्ययुक्त बनता है। मूलतः सर्वनामों की संख्या ग्यारह है –

मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कौन, कोई और कुछ आदि।

सर्वनाम के भेद:

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता द्वारा खुद के लिए या दुसरो के लिए किया जाता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे – मैं, हम (वक्ता द्वारा खुद के लिए), **तुम और आप** (सुनने वाले के लिए) और **यह, वह, ये, वे** (किसी और के बारे में बात करने के लिए) आदि।

पुरुषवाचक सर्वनाम के उदाहरण:

नीचे लिखे उदाहरणों को देखें –

मैं फिल्म देखना चाहता हूँ।

मैं घर जाना चाहती हूँ।

आप कहते हैं तो ठीक ही होगा।

तुम जब तक आये तब तक वह चला गया।

आजकल **आप** कहाँ रहते हैं।

वह पढने में बहुत तेज है।

पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं -:

उत्तमपुरुष :

जिन शब्दों का प्रयोग बोलने वाला खुद के लिए करता है। इसके अंतर्गत **मैं, मेरा, मेरे, मेरी, मुझे, मुझको, हम, हमें, हमको, हमारा, हमारे, हमारी** आदि आते हैं। जैसे – **मैं** फुटबॉल खेलता हूँ। **हम** दो, **हमारे** दो।

मध्यम पुरुष :

जिन शब्दों का प्रयोग सुनने वाले के लिए किया जाता है। इसके अंतर्गत **तू, तुझे, तुझको, तेरा, तेरे, तेरी, तुम, तुम्हे, तुमको, तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी, आप** आदि आते हैं। जैसे – **तुम** बहुत अच्छे हो।

अन्य पुरुष :

जिन शब्दों का प्रयोग किसी तीसरे व्यक्ति के बारे में बात करने के लिए होता है। इसके अंतर्गत **यह, वह, ये, वे** आदि आते हैं। इनमें व्यक्तिवाचक संज्ञा के उदाहरण भी शामिल हैं।

2. निजवाचक सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग वक्ता किसी चीज़ को अपने साथ दर्शाने या अपनी बताने के लिए करता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

निजवाचक सर्वनाम के उदाहरण:

जैसे-: **मैं** अपने कपडे **स्वयं** धो लूँगा।

मैं वहां **अपने आप** चला जाऊंगा।

ऊपर दिए वाक्यों में वक्ता ने खुद के लिए **स्वयं** और **अपने आप** का प्रयोग कामों को खुद से जोड़ने के लिए किया।

जहाँ 'आप' शब्द का प्रयोग श्रोता के लिए हो वहाँ यह आदर-सूचक मध्यम पुरुष होता है और जहाँ 'आप' शब्द का प्रयोग अपने लिए हो वहाँ निजवाचक होता है।

(निजवाचक सर्वनाम के बारे में गहराई से पढने के लिए यहाँ क्लिक करें – निजवाचक सर्वनाम – परिभाषा, उदाहरण)

3. निश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान की निश्चितता का बोध हो वे शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

निश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरण:

जैसे -: यह, वह आदि।

यह कार मेरी है।

वह मोटरबाइक तुम्हारी है।

ये पुस्तकें मेरी हैं।

वे मिठाइयाँ हैं।

यह एक गाय है।

ऊपर दिए वाक्यों में **यह, वह, ये, वे** आदि का इस्तेमाल वस्तु, व्यक्ति आदि की निश्चितता का बोध कराने के लिए किया गया है अतः ये निश्चयवाचक सर्वनाम कहलायेंगे।

(निश्चयवाचक सर्वनाम के बारे में गहराई से पढने के लिए यहाँ क्लिक करें – निश्चयवाचक सर्वनाम – भेद, उदाहरण)

4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से वस्तु, व्यक्ति, स्थान आदि की निश्चितता का बोध नही होता वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। **अनिश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरण:**

जैसे-: कुछ, कोई आदि।

मुझे **कुछ** खाना है।

मेरे खाने में **कुछ** गिर गया।

मुझे बाज़ार से **कुछ** लाना है।

कोई आ रहा है।

मुझे **कोई** नज़र आ रहा है।

ऊपर दिए गए वाक्यों में वक्ता सिर्फ अंदाजा लगा रहा है लेकिन हमे कस्तू या व्यक्ति की निश्चितता का बोध नहीं हो रहा है। अतः कुछ, कोई आदि शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम की श्रेणी में आते हैं।

(अनिश्चयवाचक सर्वनाम के बारे में गहराई से पढने के लिए यहाँ क्लिक करें – अनिश्चयवाचक सर्वनाम – परिभाषा, उदाहरण)

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के बारे में कोई सवाल पूछने या उसके बारे में जान्ने के लिए किया जाता है उन शब्दों को प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

प्रश्नवाचक सर्वनाम के उदाहरण:

जैसे- **कौन**, **क्या**, **कब**, **कहाँ** आदि।

देखो तो **कौन** आया है?

आपने **क्या** खाया है?

ऊपर दिए वाक्यों में '**कौन**' तथा '**क्या**' शब्दों का प्रयोग करके किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में जानने की कोशिश की जा रही है। अतः ये प्रश्नवाचक सर्वनाम की श्रेणी में आएंगे।

(प्रश्नवाचक सर्वनाम के बारे में गहराई से पढने के लिए यहाँ क्लिक करें – प्रश्नवाचक सर्वनाम – परिभाषा, उदाहरण)

6. सम्बन्धवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी वस्तु या व्यक्ति का सम्बन्ध बताने के लिए किया जाए वे शब्द सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम के उदाहरण:

जैसे :- **जो-सो**, **जैसा-वैसा** आदि।

जैसी करनी **वैसी** भरनी।

जो सोवेगा **सो** खोवेगा जो जागेगा सो पावेगा।

जैसा बोओगे **वैसा** काटोगे।

ऊपर दिए वाक्यों में '**जो-सो**' व '**जैसे-वैसे**' शब्दों का प्रयोग करके किसी वस्तु या व्यक्ति में सम्बन्ध बताया जा रहा है। अतःये शब्द सम्बन्धवाचक सर्वनाम की श्रेणी में आते हैं।

सर्वनाम से संबंधित यूट्ब लिंक्स

01 https://youtu.be/SQio6kOOOj0

02 https://youtu.be/h6SyF2kWAeo

03 https://youtu.be/BgYbnzMucwE

04 https://youtu.be/uQ3knFmvfqA

05 https://youtu.be/bQOz6bBKCpQ

विशेषण-

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। यथा----

अच्छा लड़का, तीन पुस्तकें, नई कलम इत्यादि।

इनमे अच्छा, तीन और नई शब्द विशेषण है जो विशेष्य की विशेषता बतलाते हैं।

हिंदी में विशेषण 5 प्रकार के होते हैं। यथा----

1.गुणवाचक विशेषण
2.परिमाणवाचक विशेषण
3.संख्यावाचक विशेषण
4.सार्वनामिक विशेषण
5.व्यक्तिवाचक विशेषण

01.गुणवाचक विशेषण

जिस विशेषण से किसी संज्ञा सर्वनाम का गुण प्रकट हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते है। इसके अंतर्गत :-
गुण: अच्छा,चालक,बुद्धिमान आदि दोष:: बुरा,गंदा,दुष्ट आदि रंग: काला,लाल आदि आकार:
लंबा,छोटा,गोल आदि अवस्था: बीमार,घायल आदि स्थान: पंजाबी,भारतीय,बंगाली आदि आते है।

02.परिमाणवाचक विशेषण

जिससे किसी चीज की परिमाण का बोध होता है उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। यथा----
थोड़ा पानी, बहुत दूध इत्यादि।
यहां पर थोड़ा और बहुत यह दोनों विशेषण है। जो क्रमानुसार पानी और दूध के परिमाण को समझा रहा हैं।

03.संख्यावाचक विशेषण

जिससे संख्या का बोध होता है उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। यथा----
एक किताब, दो मनुष्य, तीन लड़के इत्यादि।

यहां पर एक, दो और तीन यह तीन विशेषण है। जिससे क्रमानुसार किताब, मनुष्य और लड़के की संख्या का बोध हो रहा हैं।

04.सार्वनामिक विशेषण

ऐसे सर्वनाम शब्द जो संज्ञा से पहले लगकर उस संज्ञा शब्द की विशेषण की तरह विशेषता बताते हैं, वे शब्द सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।
यह शब्द संज्ञा के लिए विशेषण का काम करते हैं। जैसे: मेरी पुस्तक , कोई बालक , किसी का महल , वह लड़का , वह बालक , वह पुस्तक , वह आदमी , वह लडकी आदि।

05.व्यक्तिवाचक विशेषण

व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों से बने विशेषण को व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं। यथा- वह राम ही है, जो कल वहां खड़ा थाभरत जोधपुरी जूती पहनता हैं।
इस वाक्य में जोधपुर व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द है जो जोधपुरी में बदलकर व्यक्तिवाचक विशेषण हो गया है और जो जूती(जातिवाचक संज्ञा) की विशेषता बता रहा है।

विशेषण से संबंधित यूट्यूब लिंक्स

01 https://www.youtube.com/watch?v=f4QDsWucgAg

02 https://www.youtube.com/watch?v=AvakIFgvDPQ

03 https://www.youtube.com/watch?v=D1vfH1AL5k4

04 https://www.youtube.com/watch?v=-oaQZzgB9-o

05 https://www.youtube.com/watch?v=mAGsLgkWN_g

प्रेरणार्थक क्रिया :-

जिन क्रियाओं के प्रयोग से यह पता चले की कर्ता खुद कार्य न करके किसी और से कार्य करवा रहा है या किसी और को कार्य करने की प्रेरणा दे रहा हो उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।
जैसे :- कटवाना , करवाना , बोलवाना , पढवाना , लिखवाना , खिलवाना , सुनाना , पिलवाना , पिलवाता , पिलवाती आदि।

प्रेरणार्थक क्रिया के रूप :-

1. प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया
2. द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया

1. प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया :- प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया में कर्ता प्रेरक बनकर प्रेरणा देता है उसे प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। ये सभी क्रियाएँ सकर्मक होती हैं।
जैसे :- माँ परिवार के लिए भोजन बनाती है।
जोकर सर्कस में खेल दिखाता है।

2. द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया :- द्वितीय प्रेरणार्थ क्रिया में कर्ता खुद दूसरे को काम करने की प्रेरणा देता है उसे द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

जैसे:- माँ पुत्री से भोजन बनवाती है।

जोकर सर्कस में हाथी से करतब करवाता है।

प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के कुछ नियम इस प्रकार हैं :-

(i) मूल दो अक्षर वाली धातुओं में जब आना या वाना जोड़ दिया जाता है।

जैसे :- पढ़ – पढ़ाना – पढवाना।

चल – चलाना – चलवाना।

(ii) दो अक्षर वाली धातुओं में जब ऐ या ओ जोड़ दिया जाता है। जब दीर्घ स्वर को ह्रस्व स्वर बना दिया जाता है।

जैसे :- जीत – जिताना – जितवाना।

लेट – लिटाना – लिटवाना।

(iii) तीन अक्षर वाली धातुओं में जब आना और वाना जोड़ दिया जाता है।

जैसे :- समझ – समझाना – समझवाना।

बदल – बदलाना – बदलवाना।

(iv) कुछ धातुओं में आवश्यकतानुसार प्रत्यय लगाए जाते हैं।

जैसे :- जी – जिलाना – जिलवाना।

प्रेरणार्थक क्रिया के उदहारण इस प्रकार हैं :-

मूल क्रिया = प्रथम प्रेरणार्थक = द्वितीय प्रेरणार्थक के उदहारण इस प्रकार हैं :-

(i) उठना = उठाना = उठवाना

(ii) उड़ना = उड़ाना = उडवाना

(iii) चलना = चलाना = चलवाना

(iv) देना = दिलाना = दिलवाना

(v) जीना = जिलाना = जिलवाना

(vi) लिखना = लिखाना = लिखवाना

(vii) जगना = जगाना = जगवाना

(viii) सोना = सुलाना = सुलवाना

(ix) पीना = पिलाना = पिलवाना

(x) देना = दिलाना = दिलवाना

(xi) धोना = धुलाना = धुलवाना

(xii) रोना = रुलाना = रुलवाना

(xiii) घूमना = घुमाना = घुमवाना

(xiv) पढना = पढ़ाना = पढवाना

(xv) देखना = दिखाना = दिखवाना

(xvi) खाना = खिलाना = खिलवाना आदि।

प्रेरणार्थक क्रिया से संबंधित यूटूब लिंक्स

01 https://www.youtube.com/watch?v=xRhTBgPgqoA

02 https://www.youtube.com/watch?v=gD3nwzO2U9E

03 https://www.youtube.com/watch?v=oUCw8PK6S44

04 https://www.youtube.com/watch?v=YrYouagBxOc

05 https://www.youtube.com/watch?v=UP-xAjvpRek

लिंग

जो शब्द संज्ञा में विकार या परिवर्तन लाते हैं, वे विकारी तत्व कहलाते हैं। लिंग, वचन तथा कारक के कारण संज्ञा का रूप बदल जाता है।

शब्द के जिस रूप से स्त्री या पुरुष जाति का बोध हो, वह लिंग कहलाता है।

स्त्री तथा पुरुष जाति का बोध कराने के आधार पर लिंग के दो भेद हैं-

1. पुल्लिंग
2. स्त्रीलिंग

1. पुल्लिंग – पुरुष जाति को बोध कराने वाले शब्द पुल्लिंग कहलाते है; जैसे-पिता, नौकर, घोड़ा, स्टेशन, अखबार, पेड़ आदि।

2. स्त्रीलिंग – स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं; जैसे-माँ, सेठानी, घोड़ी, चिड़िया, मेज, कुरसी, चम्मच, लड़की, शेरनी, टोकरी आदि।

पुल्लिंग शब्दों की पहचान

दिनों के नाम
महीनों के नाम
पहाड़ों के नाम
पेड़ों के नाम (इमली को छोड़कर)

ग्रहों के नाम (पृथ्वी को छोड़कर)
देशों के नाम
समुद्रों के नाम
कुछ शब्दों में नर तथा मादा लगाकर पुल्लिंग या स्त्रीलिंग शब्द बनाया जाता है।
नर भालू, मादा भालू, नर कौआ, मादा कौआ।।

पुल्लिंग की पहचान – जिन शब्दों के पीछे 'आ' पन, 'पा' 'अक' तथा 'न' आता हो। वे पुल्लिंग शब्द होते है; जैसे-लड़का, बचपन, बुढ़ापा, गायक।

कुछ संज्ञा शब्द स्त्री तथा पुरुष के लिए समान रूप में प्रयोग किए जाते है; जैसे-प्रधानमंत्री, मंत्री, डॉक्टर, इंजीनियर, खिलाड़ी, राष्ट्रपति आदि।

कुछ अन्य नाम

ग्रहों-तारों के नाम, धातुओं के नाम, शरीर अंग, भाववाचक संज्ञा, आकारांत शब्द।

स्त्रीलिंग शब्दों की पहचान

जो नाम स्त्रीलिंग होते हैं, वे इस प्रकार हैं-भाषा के नाम, नदियों के नाम, तिथियों के नाम कोमल भावों के नाम (दया, करूणा, ममता), शक्तिसूचक नाम (पुलिस, सेना, समिति), बोलियों के नाम, लिपियों के नाम (देवनागरी, फारसी)।

कुछ शब्द सदैव स्त्रीलिंग रहते हैं; जैसे-मक्खी, कोयल, मछली, छिपकली आदि।

स्त्रीलिंग की पहचान – जिन शब्दों के पीछे, ई या आवट आनी' 'आइन' 'ता' 'इन' आदि लगा होता है, वे स्त्रीलिंग होते हैं- बोली डिबिया, थकावट, महारानी, पंडिताइन, मित्रता, धोबिन आदि। प्राणियों के लिंग समझने व बताने में कठिनाई नहीं होती है। ईकारांत शब्द, आकारांत शब्द, उकारांत शब्द।

पुल्लिंग	प्रत्यय	स्त्रीलिंग
पुत्र	ई	पुत्री
लड़का	ई	लड़की
नर	ई	नारी
कटोरा	ई	कटोरी
बेटा	ई	बेटी
सुत	आ	सुता
छात्र	आ	छात्रा
आचार्य	आ	आचार्या
खाट	ईया	खटिया
बंदर	ईया	बंदरिया

आइन या आनी लगाकर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पंडित ठाकुर चौधरी चौबे	पंडिताइन ठकुराइन चौधराइन चौबाइन

कुछ सदैव अलग रूप

माता – पिता

भाई – बहने

गाय – बैल

वर – वधू

ससुर – सास

विद्वान – विदुषी।

लिंग से संबंधित यूटूब लिंक्स

01 https://www.youtube.com/watch?v=SNwDBAi3yi8

02 https://www.youtube.com/watch?v=M36P7w9sxd4

03 https://www.youtube.com/watch?v=Dv4agFz9KOk

04 https://www.youtube.com/watch?v=ZHuqxWbMtas

05 https://www.youtube.com/watch?v=nhm8bfT9DZ4

वचन

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध होता है, वह वचन कहलाते हैं। जैसे- तालाब में बहुत सारी मछलियाँ हैं।

वचन के दो भेद होते हैं:-

एकवचन –

शब्द के जिस रूप से उसके एक होने का बोध हो, वह एकवचन कहलाते हैं। जैसे- स्त्री, घोड़ा, नदी, रुपया आदि।

बहुवचन –

शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का बोध हो, वह बहुवचन कहलाते हैं। जैसे- स्त्रियाँ, घोड़े, नदियाँ, रूपये आदि।

वचन परिवर्तन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :

1. कुछ शब्द सदैव बहुवचन के रूप में ही प्रयोग किये जाते हैं; जैसे - हस्ताक्षर, आँसू, दर्शन, प्राण, दाम, अक्षत, लोग आदि।
2. कुछ शब्द सदैव एकवचन के रूप में ही प्रयोग होते हैं; जैसे - बारिश, पानी, दूध, घी, दही, आकाश, जनता आदि।
3. द्रव्यवाचक संज्ञा तथा भाववाचक संज्ञा का प्रयोग सदैव एकवचन में ही होता है; जैसे - राजा हरिश्चंद्र सदैव सत्य बोलते थे।
4. आदरसूचक शब्दों में सदैव बहुवचन का प्रयोग किया जाता है; जैसे - माता जी बाज़ार गई हैं।
5. कुछ शब्द दोनों वचनों में एक जैसे रहते है। जैसे- पिता, योद्धा, चाचा, फल, बाज़ार, काग़ज़, फूल, छात्र, दादा, राजा, मुनि आदि।

वचन परिवर्तन –

'अ' के स्थान पर 'एँ' लगाकर

एकवचन	बहुवचन
पुस्तक	पुस्तकें
बात	बातें
बहन	बहनें
आँख	आँखें
कलम	कलमें
गाय	गायें
बांह	बांहें

'आ' के साथ 'एँ' लगाकर

एकवचन	बहुवचन
पत्रिका	पत्रिकाएँ
माला	मालाएँ
माता	माताएँ
कन्या	कन्याएँ
महिला	महिलाएँ
कथा	कथाएँ
अध्यापिका	अध्यापिकाएँ
सेना	सेनाएँ
लता	लताएँ
भुजा	भुजाएँ
शाखा	शाखाएँ

'आ' के स्थान पर 'ए' लगाकर

एकवचन	बहुवचन
पत्ता	पत्ते
लड़का	लड़के
छाता	छाते
रूपया	रूपये
बेटा	बेटे
कमरा	कमरे
जूता	जूते
बस्ता	बस्ते
घोड़ा	घोड़े
पक्का	पक्के
बच्चा	बच्चे
कपड़ा	कपड़े
रास्ता	रास्ते
तारा	तारे

'इ'/ 'ई' के स्थान पर 'इयाँ' लगाकर

एकवचन	बहुवचन
लड़की	लड़कियाँ
जाति	जातियाँ
चींटी	चीटियाँ
पत्ती	पत्तियाँ
मिठाई	मिठाइयाँ

नदी	नदियाँ
चाबी	चाबियाँ
थाली	थालियाँ
लकड़ी	लकड़ियाँ
रीति	रीतियाँ
सखी	सखियाँ
टोपी	टोपियाँ
तिथि	तिथियाँ
नारी	नारियाँ
सीढ़ी	सीढ़ियाँ

'इया' के 'या' पर चंद्रबिंदु(◌ँ)लगाकर

एकवचन	बहुवचन
गुड़िया	गुड़ियाँ
डिबिया	डिबियाँ
बुढ़िया	बुढ़ियाँ
बिंदिया	बिंदियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ
चुहिया	चुहियाँ
पुड़िया	पुड़ियाँ

'उ', 'ऊ ' तथा 'औ ' के साथ 'एँ' लगाकर

एकवचन	बहुवचन
ऋतु	ऋतुएँ
गौ	गौएँ
धातु	धातुएँ
वस्तु	वस्तुएँ
बहू	बहुएँ
धेनु	धेनुएँ

कुछ शब्दों के बहुवचन, शब्दों के अंत में नए शब्द जोड़कर बनाए जाते हैं:

एकवचन	बहुवचन
पक्षी	पक्षीवृंद
अध्यापक	अध्यापकगण
सज्जन	सज्जनलोग
मज़दूर	मज़दूरवर्ग
गुरु	गुरुजन
व्यापारी	व्यापारीगण
छात्र	छात्रगण
प्रजा	प्रजाजन
कवि	कविगण
विद्यार्थी	विद्यार्थीगण
अमीर	अमीरलोग
मित्र	मित्रवर्ग

वचन से संबंधित यूट्यूब लिंक्स

01 https://www.youtube.com/watch?v=whO-GONEI6M

02 https://www.youtube.com/watch?v=TlR8_hVajwQ

03 https://www.youtube.com/watch?v=ONt-H-pmoy0

04 https://www.youtube.com/watch?v=4TKablyH6Bg

05 https://www.youtube.com/watch?v=uYo5KfiJ-lA

विलोम शब्द / विपरीतार्थक शब्द

किसी शब्द का विपरीत या उल्टा अर्थ देने वाले शब्द विपरीतार्थक / विलोम शब्द कहलाते हैं। विलोम शब्दों में तत्सम का विपरीत तत्सम और तदभव का विपरीत तदभव शब्द होता है। कुछ विलोम शब्द उपसर्ग लगाकर बनते हैं; जैसे - शुद्ध - अशुद्ध और कुछ के उपसर्ग बदलकर भी बनते हैं; जैसे - आस्तिक - नास्तिक।

कुछ विलोम शब्दों के उदाहरण नीचे दिए जा रहे है –

क्र.सं	शब्द	विलोम
1	आलस्य	स्फूर्ति
2	निर्माण	ध्वंस
3	सुपुत्र	कुपुत्र
4	सौभाग्य	दुर्भाग्य
5	कायर	वीर
6	अनुज	अग्रज
7	उपकार	अपकार
8	उदार	अनुदार
9	क्रय	विक्रय
10	योग्य	अयोग्य
11	शिष्ट	अशिष्ट
12	सामान्य	असामान्य
13	निर्मल	मलिन
14	अमृत	विष
15	लाभ	हानि
16	हिंसा	अहिंसा
17	प्रेम	घृणा
18	आज्ञा	अवज्ञा
19	न्याय	अन्याय
20	आकाश	पाताल

21	एकता	अनेकता
22	बाढ़	सूखा
23	अनुराग	विराग
24	अर्थ	अनर्थ
25	हित	अहित
26	शिक्षित	अशिक्षित
27	आदान	प्रदान
28	मानव	दानव
29	उर्वर	ऊसर
30	राजा	रंक

31	आगमन	प्रस्थान
32	सुगम	दुर्गम
33	स्तुति	निंदा
34	प्रत्यक्ष	अप्रत्यक्ष
35	उष्ण	शीत
36	आदि	अंत
37	कृतज्ञ	कृतघ्न
38	अपमान	सम्मान
39	इच्छा	अनिच्छा
40	स्नेह	घृणा
41	चिंतित	निश्चिंत
42	सख्त	कोमल
43	जीवन	मरण / मृत्यु

44	उत्थान	पतन
45	सफल	असफल
46	उत्कृष्ट	निकृष्ट
47	आयात	निर्यात
48	शुद्ध	अशुद्ध
49	धनी	निर्धन
50	पाप	पुण्य

विलोम शब्द / विपरीतार्थक शब्द से संबंधित यूट्यूब लिंक्स

01 https://www.youtube.com/watch?v=momRY30ygj4

02 https://www.youtube.com/watch?v=b2JLZMA49zE

03 https://www.youtube.com/watch?v=faRnrw8qmf4

04 https://www.youtube.com/watch?v=d_QHA2L1qEA

05 https://www.youtube.com/watch?v=YdXWpA4oTYo

'कारक'

इन दो 'परिभाषाओं' का अर्थ यह हुआ कि संज्ञा या सर्वनाम के आगे जब 'ने', 'को', 'से' आदि विभक्तियाँ लगती हैं, तब उनका रूप ही 'कारक' कहलाता है।

विभक्ति या परसर्ग - जिन प्रत्ययों की वजह से कारक की स्थिति का बोध होता है, उसे विभक्ति या परसर्ग कहते हैं।

उदाहरण -

श्रीराम **ने** रावण **को** बाण **से** मारा।

इस वाक्य में प्रत्येक शब्द एक-दूसरे से बँधा है और प्रत्येक शब्द का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में क्रिया के साथ है।

यहाँ 'ने' 'को' 'से' शब्दों ने वाक्य में आये अनेक शब्दों का सम्बन्ध क्रिया से जोड़ दिया है। यदि ये शब्द न हो तो शब्दों का क्रिया के साथ तथा आपस में कोई सम्बन्ध नहीं होगा। संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ सम्बन्ध स्थापित करने वाला रूप कारक होता है।

कारक के भेद

1. कर्ता कारक
2. कर्म कारक
3. करण कारक
4. संप्रदान कारक
5. अपादान कारक
6. संबंध कारक
7. अधिकरण कारक
8. संबोधन कारक

कारक के लक्षण, चिन्ह, और विभक्ति चिन्ह

	कारक	लक्षण	चिन्ह	विभक्ति
(i)	कर्ता	क्रिया को पूरा करने वाला	ने	प्रथमा
(ii)	कर्म	क्रिया को प्रभावित करने वाला	को	द्वितीया
(iii)	करण	क्रिया का साधन	से, के द्वारा	तृतीया
(iv)	सम्प्रदान	जिसके लिए काम हो	को, के लिए	चतुर्थी
(v)	अपादान	जहाँ पर अलगाव हो	से	पंचमी
(vi)	संबंध	जहाँ पर पदों में संबंध हो	का, की, के, रा, री, रे	षष्ठी
(vii)	अधिकरण	क्रिया का आधार होना	में, पर	सप्तमी
(viii)	सम्बोधन	किसी को पुकारना	हे, अरे!, हो!	सम्बोधन

कर्ता कारक

जो वाक्य में कार्य करता है, उसे कर्ता कहा जाता है। अथार्त वाक्य के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का पता चले, उसे कर्ता कहते हैं।

दूसरे शब्द में - क्रिया का करने वाला 'कर्ता' कहलाता है।

कर्ता कारक की विभक्ति 'ने' होती है। 'ने' विभक्ति का प्रयोग भूतकाल की क्रिया में किया जाता है। कर्ता स्वतंत्र होता है। कर्ता कारक में ने विभक्ति का लोप भी होता है। इस 'ने' चिह्न का वर्तमानकाल और भविष्यकाल में प्रयोग नहीं होता है। इसका सकर्मक धातुओं के साथ भूतकाल में प्रयोग होता है।

जैसे -

1.राम ने रावण को मारा।

2.लड़की स्कूल जाती है।

पहले वाक्य में क्रिया का कर्ता राम है। इसमें 'ने'कर्ता कारक का विभक्ति-चिह्न है। इस वाक्य में 'मारा'भूतकाल की क्रिया है। 'ने'का प्रयोग प्रायः भूतकाल में होता है। दूसरे वाक्य में वर्तमानकाल की क्रिया का कर्ता लड़की है। इसमें 'ने'विभक्ति का प्रयोग नहीं हुआ है।

कर्म कारक

जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया का प्रभाव पड़े, उसे कर्म कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में - वाक्य में क्रिया का फल जिस शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते है।
इसकी विभक्ति 'को' है। लेकिन कहीं-कहीं पर कर्म का चिन्ह लोप होता है।
जैसे- माँ बच्चे को सुला रही है।

इस वाक्य में सुलाने की क्रिया का प्रभाव बच्चे पर पड़ रहा है। इसलिए 'बच्चे को' कर्म कारक है।

राम ने रावण को मारा।
यहाँ 'रावण को' कर्म है।

बुलाना, सुलाना, कोसना, पुकारना, जमाना, भगाना आदि क्रियाओं के प्रयोग में अगर कर्म संज्ञा हो, तो 'को' विभक्ति जरुर लगती है।

जैसे -

(i) अध्यापक, छात्र को पीटता है।
(ii) सीता फल खाती है।
(iii) ममता सितार बजा रही है।

(iv) राम ने रावण को मारा।

(v) गोपाल ने राधा को बुलाया।

(vi) मेरे द्वारा यह काम हुआ।

करण कारक

जिस वस्तु की सहायता से या जिसके द्वारा कोई काम किया जाता है, उसे करण कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में - वाक्य में जिस शब्द से क्रिया के सम्बन्ध का बोध हो, उसे करण कारक कहते है। इसकी विभक्ति 'से' है।

'करण' का अर्थ है 'साधन'। अतः 'से' चिह्न वहीं करणकारक का चिह्न है, जहाँ यह 'साधन' के अर्थ में प्रयुक्त हो।

जैसे -

हम आँखों से देखते है।
इस वाक्य में देखने की क्रिया करने के लिए आँख की सहायता ली गयी है। इसलिए आँखों से करण कारक है।

हिन्दी में करणकारक के अन्य चिह्न है - से, द्वारा, के द्वारा, के जरिए, के साथ, के बिना इत्यादि। इन चिह्नों में अधिकतर प्रचलित से', 'द्वारा', 'के द्वारा' 'के जरिए' इत्यादि ही है।

सम्प्रदान कारक

जिसके लिए कोई क्रिया (काम) की जाती है, उसे सम्प्रदान कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में - जिसके लिए कुछ किया जाय या जिसको कुछ दिया जाय, इसका बोध करानेवाले शब्द के रूप को सम्प्रदान कारक कहते है। इसकी विभक्ति 'को' और 'के लिए' है।

सम्प्रदान कारक का अर्थ होता है – देना। जिसके लिए कर्ता काम कर्ता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं।
सम्प्रदान कारक के विभक्ति चिन्ह के लिए और को होता है। इसको 'किसके लिए' प्रश्नवाचक शब्द लगाकर भी पहचाना जा सकता है। समान्य रूप से जिसे कुछ दिया जाता है या जिसके लिए कोई कार्य किया जाता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं।

जैसे -

(i) गरीबों को खाना दो।

(ii) मेरे लिए दूध लेकर आओ।

(iii) माँ बेटे के लिए सेब लायी।

अपादान कारक

जिससे किसी वस्तु का अलग होना पाया जाता है, उसे अपादान कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में - संज्ञा के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने का भाव प्रकट होता है, उसे अपादान कारक कहते है।

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होना, उत्पन्न होना, डरना, दूरी, लजाना, तुलना करना आदि का पता चलता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिन्ह से होता है। इसकी पहचान 'किससे' जैसे प्रश्नवाचक शब्द से भी की जा सकती है।

इसकी विभक्ति 'से' है।

जैसे-

दूल्हा घोड़े **से** गिर पड़ा।

इस वाक्य में 'गिरने' की क्रिया 'घोड़े से' हुई अथवा गिरकर दूल्हा घोड़े से अलग हो गया। इसलिए 'घोड़े से' अपादान कारक है।

जिस शब्द में अपादान की विभक्ति लगती है, उससे किसी दूसरी वस्तु के पृथक होने का बोध होता है।

जैसे-

हिमालय से गंगा निकलती है।
मोहन ने घड़े से पानी ढाला।

सम्बन्ध कारक

शब्द के जिस रूप से संज्ञा या सर्वनाम के संबध का ज्ञान हो, उसे सम्बन्ध कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी अन्य शब्द के साथ सम्बन्ध या लगाव प्रतीत हो, उसे सम्बन्धकारक कहते है।

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप की वजह से एक वस्तु की दूसरी वस्तु से संबंध का पता चले उसे संबंध कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिन्ह का, के, की, रा, रे, री आदि होते हैं। इसकी विभक्तियाँ संज्ञा, लिंग, वचन के अनुसार बदल जाती हैं।

जैसे -

(i) सीतापुर, मोहन का गाँव है।

(ii) सेना के जवान आ रहे हैं।

(iii) यह सुरेश का भाई है।

(iv) यह सुनील की किताब है।

(v) राम का लड़का, श्याम की लडकी, गीता के बच्चे।

इस कारक से अधिकतर कर्तृत्व, कार्य-कारण, मोल-भाव, परिमाण इत्यादि का बोध होता है।

जैसे -

अधिकतर - राम की किताब, श्याम का घर।

कर्तृत्व - प्रेमचन्द्र के उपन्यास, भारतेन्दु के नाटक।

कार्य-करण - चाँदी की थाली, सोने का गहना।

मोल-भाव - एक रुपए का चावल, पाँच रुपए का घी।

परिमाण -

चार भर का हार, सौ मील की दूरी, पाँच हाथ की लाठी।

अधिकरण कारक

शब्द के जिस रूप से क्रिया के आधार का ज्ञान होता है, उसे अधिकरण कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में - क्रिया या आधार को सूचित करनेवाली संज्ञा या सर्वनाम के स्वरूप को अधिकरण कारक कहते है।

अधिकरण का अर्थ होता है - आधार या आश्रय। संज्ञा के जिस रूप की वजह से क्रिया के आधार का बोध हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति में और पर होती है। भीतर, अंदर, ऊपर, बीच आदि शब्दों का प्रयोग इस कारक में किया जाता है।

इसकी पहचान किसमें, किसपर, किस पे आदि प्रश्नवाचक शब्द लगाकर भी की जा सकती है। कहीं-कहीं पर विभक्तियों का लोप होता है, तो उनकी जगह पर किनारे, यहाँ, वहाँ, समय आदि पदों का प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी 'में' के अर्थ में 'पर' और 'पर' के अर्थ में 'में' लगा दिया जाता है।

जैसे -

(i) हरी घर में है।

(ii) पुस्तक मेज पर है।

(iii) पानी में मछली रहती है।

(iv) फ्रिज में सेब रखा है।

(v) कमरे के अंदर क्या है।

संबोधन कारक

जिन शब्दों का प्रयोग किसी को बुलाने या पुकारने में किया जाता है, उसे संबोधन कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में - संज्ञा के जिस रूप से किसी के पुकारने या संकेत करने का भाव पाया जाता है, उसे सम्बोधन कारक कहते है।

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से बुलाने या पुकारने का बोध हो उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। जहाँ पर पुकारने, चेतावनी देने, ध्यान बटाने के लिए जब सम्बोधित किया जाता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं।

इसकी पहचान करने के लिए (!) चिन्ह लगाया जाता है। इसके चिन्ह हे, अरे, अजी आदि होते हैं। इसकी कोई विभक्ति नहीं होती है।

जैसे -

(i) हे ईश्वर! रक्षा करो।

(ii) अरे! बच्चो शोर मत करो।

(iii) हे राम! यह क्या हो गया।

(iv) अरे भाई! यहाँ आओ।

(v) अजी तुम उसे क्या मरोगे?

कर्म और सम्प्रदान कारक में अंतर

इन दोनों कारक में 'को' विभक्ति का प्रयोग होता है। कर्म कारक में क्रिया के व्यापार का फल कर्म पर पड़ता है और सम्प्रदान कारक में देने के भाव में या उपकार के भाव में को का प्रयोग होता है।

जैसे -

(i) विकास ने सोहन को आम खिलाया।

(ii) मोहन ने साँप को मारा।

(iii) राजू ने रोगी को दवाई दी।

(iv) स्वास्थ्य के लिए सूर्य को नमस्कार करो।

करण और अपादान कारक में अंतर

करण और अपादान दोनों ही कारकों में 'से' चिन्ह का प्रयोग होता है। परन्तु अर्थ के आधार पर दोनों में अंतर होता है। करण कारक में जहाँ पर 'से' का प्रयोग साधन के लिए होता है, वहीं पर अपादान कारक में अलग होने के लिए किया जाता है।

कर्ता कार्य करने के लिए जिस साधन का प्रयोग करता है उसे करण कारक कहते हैं। लेकिन अपादान में अलगाव या दूर जाने का भाव निहित होता है।

'कारक' से संबंधित यूट्यूब लिंक्स

01 https://www.youtube.com/watch?v=hrxXbBZ1B2Y

02 https://www.youtube.com/watch?v=x99xdsZDql4

03 https://www.youtube.com/watch?v=-73ebrbpbgQ

04 https://www.youtube.com/watch?v=mCd-BETvCQw

05 https://www.youtube.com/watch?v=nT02BDXeCoI

06 https://www.youtube.com/watch?v=7JqcELMd_Tg

07 https://www.youtube.com/watch?v=hdhApCM3z1k

08 https://www.youtube.com/watch?v=uqgTPPCpbd0

09 https://www.youtube.com/watch?v=Y3OT4sK9kf8

10 https://www.youtube.com/watch?v=tChYFxQc8Yg

संधि

संधि का अर्थ है-मेल। जब दो वर्षों के मेल से उनके मूल रूप में जो परिवर्तन या विकार आ जाता है, वह संधि कहलाता है; जैसे-

नर + ईश = नरेश

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

उपर्युक्त उदाहरणों में पहले शब्द के अंतिम वर्ण तथा दूसरे शब्द के पहले वर्ण के मेल में परिवर्तन आ गया है। यही परिवर्तन संधि है।

संधि विच्छेद – संधि का अर्थ है-मिलना, विच्छेद का अर्थ है-अलग होना। दो वर्षों के मेल से बने नए शब्द को वापस पहले की स्थिति में लाना संधि विच्छेद कहलाता है; जैसे–

विद्यालय = विद्या + आलय

सूर्योदय = सूर्य + उदय

संधि के भेद – संधि के तीन भेद होते हैं।

(क) स्वर संधि

(ख) व्यंजन संधि

(ग) विसर्ग संधि।

(क) स्वर संधि –

स्वर संधि यानी स्वरों का मेल। दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं; जैसे– महा + आत्मा = महात्मा, हिम + आलय = हिमालय।

स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं

दीर्घ संधि

गुण संधि

वृधि संधि

यण संधि

अयादि संधि

1. दीर्घ संधि – जब ह्रस्व या दीर्घ स्वर के बाद ह्रस्व या दीर्घ स्वर आएँ, तो दोनों के मेल से दीर्घ स्वर हो जाता है। इसे दीर्घ संधि कहते हैं; जैसे

परम + अर्थ = परमार्थ

सार + अंश = सारांश

न्याय + अधीश = न्यायधीश

देह + अंत = देहांत

मत + अनुसार = मतानुसार

भाव + अर्थ = भावार्थ

अ + आ = आ

हिम + आलय = हिमालय

छात्र + आवास = छात्रावास

आ + आ = आ – विद्या + आलय = विद्यालय, शिव + आलय = शिवालय।

इ + इ = ई – अभि + इष्ट = अभीष्ट, हरी + इच्छा = हरीच्छा।

इ + ई = ई – हरि + ईश = हरीश, परि + ईक्षा = परीक्षा।

ई + इ = ई – शची + इंद्र = शचींद्र, मही + इंद्र = महेंद्र।

ई + ई = ई – रजनी + ईश = रजनीश, नारी + ईश्वर = नारीश्वर

उ + उ = ऊ – भानु + उदय = भानूदय, लघु + ऊर्मि = लघूर्मि

उ + ऊ = ऊ – लघु + ऊर्मि = लघूर्मि,

ऊ + ऊ = ऊ – भू+ उर्जा = भूर्जा, भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व

2. गुण संधि – अ/आ का मेल इ/ई से होने पर ए, उ + ऊ से होने पर ओ तथा ऋ से होने पर अर् हो जाता है। इसे गुण संधि कहते हैं; जैसे

अ/आ + इ + ई = ए – नर + इंद्र = नरेंद्र, नर + ईश = नरेश।

अ/आ + उ + ऊ = ओ – पर + उपकार = परोपकार, महा + उत्सव = महोत्सव।

अ/आ + ऋ + ऋ = अर – देव + ऋषि = देवर्षि, महा + ऋषि = महर्षि।

3. वृधि संधि – वृधि संधि में अ या आ के बाद यदि ए या ऐ हो तो दोनों का 'ऐ' होगा। यदि अ या आ के बाद ओ या आ

आए तो दोनों का 'ओ' होगा; जैसे

अ + आ + ए/ऐ = ऐ

एक + एक = एकैक, सदा + एव = सदैव

अ/आ + ओ + औ = औ = वन + औषधि = वनौषधि, जल + ओध = जलौध।

4. यण संधि – इ अथवा ई के बाद इ और ई को छोड़कर यदि कोई अन्य स्वर हो तो 'इ' अथवा ई के स्थान पर य् उ अथवा ऊ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तो उनके स्थान पर 'व' और 'ऋ' को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तो उसके स्थान पर 'र' हो जाता है। इसे यणसंधि कहते हैं; जैसे

अति + अधिक = अत्यधिक, यदि + अपि = यद्यपि

5. अयादि संधि – यदि पहले शब्द के अंत में ए/ऐ, ओ/औ एक दूसरे के शब्द के आरंभ में भिन्न स्वर आए तो क्रमशः ए का अय, ऐ का आय, ओ का अव, तथा औ का आव हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं; जैसे

ने + अक = नायक, भो + अन = भवन

पौ + अक = पावक, भौ + अक = भावुक

(ख) व्यंजन संधि –

व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, वह व्यंजन संधि कहलाता . है; जैसे

सम + कल्प = संकल्प, जगत+ ईश = जगदीश।

व्यंजन संधि के प्रमुख नियम निम्नलिखित हैं-

(क) कवर्ग का तृतीय वर्ण-वर्गों के प्रथम वर्ण से परे वर्गों का तृतीय, चतुर्थ वर्ण कोई स्वर अथवा य, र, ल, वे, ह आदि वर्गों में से कोई वर्ण हो तो पहले वर्ण को अपने वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है; जैसे।

दिक् + अंबर = दिगंबर, सत् + धर्म = सद्धर्म ।

(ख) खवर्ग का पंचम वर्ग-वर्ग के प्रथम या तृतीय वर्ण से परे पाँचवा वर्ण हो, तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवा वर्ण हो जाता है; जैसे

वाक् + मय = वाङ्मय, सत् + मार्ग = सन्मार्ग

जगत् + नाथ = जगन्नाथ, चित् + मय = चिन्मय।

(ग) त के बाद ज या झ हो तो 'त' के स्थान पर 'न' हो जाता है; जैसे

सत् + जन = सज्जान, विपत् + जाल = विपज्जाल, जगत् + जननी = जगज्जननी

(घ) त् के बाद ङ या ढ़ हो तो 'त्' के स्थान पर 'ड' हो जाता है; जैसे

उत् + डयन = उड्डयन, वृहत + टीका = वृहट्टीका।

(ङ) त् के बाद ल हो तो 'त' के स्थान पर 'ल' हो जाता है; जैसै

तत् + लीन = तल्लीन, उत् + लेख = उल्लेख

(च) त् के बाद श हो तो 'त्' के स्थान पर 'च्' और 'श' के स्थान पर 'छ' हो जाता है; जैसे

उत् + श्वास = उच्छवास, तत् + शिव = तच्छिव

(छ) यदि त्' के बाद च्, छ हो तो 'त्' का 'च' हो जाता है; जैसे

उत् + चारण = उच्चारण, सत् + चरित्र = सच्चरित्र

(ज) त् के बाद ह हो तो 'त्' का 'द्' और ह का 'ध' हो जाता है; जैसे

उत् + हार = उद्धार, तत् + हित = तधित

(झ) 'म' के बाद कोई स्पर्श व्यंजन हो तो 'म्' का अनुस्वार या बाद वाले वर्ण के पंचम हो जाता है; जैसे

अहम् + कार = अहंकार, सम् + तोष = संतोष

(ज) "म्' के बाद य, र, ल, व, स, श, ह हो, तो म् अनुस्वार हो जाता है; जैसे

सम् + योग = संयोग, सम् + वाद = संवाद, सम् + हार = संहार

अपवाद-यदि सम् के बाद 'राट्' हो तो म् का म् ही रहता है। जैसे

सम् + राट = सम्राट

(ट) "छ' से पूर्व स्वर हो तो 'छ' से पूर्व 'च' आ जाता है।

परि + छेद = परिच्छेद, आ + छादन् = अच्छादन।

(ठ) ह्रस्व स्वर 'इ' उ के बाद यदि 'र' के बाद फिर 'र' हो तो ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है। 'र' का लोप हो जाता है; जैसे

निर + रस = नीरस, निर + रोग = नीरोग

(ड) न् का 'ण' होना–यदि ऋ र, ष के बाद 'न' व्यंजन आता है तो 'न' का 'ण' हो जाता है; जैसे

राम + अयन = रामायण, परि + नाम = परिणाम

(ढ) ह्रस्व के बाद 'छ' हो तो उसके पहले 'च' जुड़ जाता है। दीर्घ स्वर में विकल्प होता है।

परि + छेद = परिच्छेद, शाला + छादन = शालाच्छादन

कुछ अन्य उदाहरण

क् + ग् – वाक् + ईश = वागीश, दिक + अंत = दिगंत।

त् + ६ – तत् + भव = तद्भव, भगवत् + गीता = भगवदगीता ।

छ संबंधी नियम – स्व + छेद = स्वच्छेद, परि + छेद = परिच्छेद।

म संबंधी नियम – सम् + गति = संगति, सम् + तोष = संतोष।

(ग) विसर्ग संधि –

विसर्ग का किसी स्वर या व्यंजन से मेल होने पर जो विकार (परिवर्तन) होता है वह विसर्ग संधि कहलाता है; जैसे

(क) विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद में कोई घोष व्यंजन, वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण (य, र, ल, व, ह) हो तो ।

विसर्ग का 'ओ' हो जाता है। जैसे–

मनः + बल = मनोबल, मनः + रंजन = मनोरंजन, मनः + हर = मनोहर।

(ख) विसर्ग के बाद यदि च, छ हो, तो विसर्ग का 'श' हो जाता है; जैसे

निः + चिंत = निश्चित, निः + छल = निश्छल, दु: + चरित्र = दुश्चरित्र।

(ग) विसर्ग के बाद यदि ट, ठ हो तो विसर्ग का.ष हो जाता है; जैसे

धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

(घ) विसर्ग के बाद यदि त, थ हो तो विसर्ग का 'स' हो जाता है; जैसे

दुः + तर = दुस्तर, नमः + ते = नमस्ते ।

(ङ) यदि विसर्ग के पहले 'अ' और 'आ' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आए और विसर्ग के बाद कोई स्वर हो या किसी वर्ग का तीसरा, चौथा या पाँचवा वर्ण हो या य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग के बाद कोई स्वर हो या किसी वर्ग का तीसरा, चौथा या पाँचवा वर्ण हो या य, र, ले,व, ह हो, तो विसर्ग के स्थान पर 'र' हो जाता है; जैसे

निः + बल = निर्बल, निः + लोभ = निर्लोभ, निः + विकार = निर्विकार।

(च) विसर्ग से परे श, ष, स हो तो विसर्ग के विकल्प से परे वाले वर्ण हो जाता है।

निः + संदेह = निस्संदेह, दु: + शासन = दुश्शासन

(छ) यदि विसर्ग के पहले इकार या उकार आए और विसर्ग के बाद का वर्ण क, ख, प, फ, हो तो विसर्ग का ष हो जाता है; जैसे

निः + कपट = निष्कपट, दु: + कर = दुष्कर।

(ज) यदि विसर्ग के बाद 'अ' न हो तो विसर्ग का लोप हो जाएगा; जैसे

अतः + एव = अतएव

'संधि' से संबंधित यूट्यूब लिंक्स

01 https://www.youtube.com/watch?v=vHoAX5-F9xg

02 https://www.youtube.com/watch?v=eeX52AdiiAw

03 https://www.youtube.com/watch?v=9SAGsw8VigY

04 https://www.youtube.com/watch?v=b70bdtf5Hzc

05 https://www.youtube.com/watch?v=aZpvpzcm5R4

06 https://www.youtube.com/watch?v=Fjt7eJRVVN0

07 https://www.youtube.com/watch?v=SrIxJjtNbUg

08 https://www.youtube.com/watch?v=KItyVf6IlxA

09 https://www.youtube.com/watch?v=RTNA5cEMw3Y

10 https://www.youtube.com/watch?v=VH84C3AfdbU

समास

समास का तात्पर्य है *"संक्षिप्तीकरण"*

दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास (Samas) कहते हैं।

उदाहरण :

रसोईघर - रसोई के लिए घर।

नीलगाय - नीले रंग की गाय।

समास के नियमों से निर्मित शब्द सामासिक शब्द (Samasik Shabd) कहलाता है। इसे हम समस्त पद (Samast Pad) भी कहते हैं।

समास के भेद

Samas Ke Bhed : हिंदी में समास के छः भेद हैं :

(1) अव्ययीभाव समास (Avyayibhav Samas)

(2) तत्पुरुष समास (Tatpurush Samas)

(3) द्विगु समास (Dvigu Samas)

(4) द्वंद्व समास (Dvandva Samas)

(5) कर्मधारय समास (Karmadharaya Samas)

(6) बहुव्रीहि समास (Bahuvrihi Samas)

अव्ययीभाव समास

इस समास में पहला पद (पूर्व पद) प्रधान होता है और पूरा पद अव्यय होता है

इसमें पहला पद उपसर्ग होता है जैसे अ, आ, अनु, प्रति, हर, भर, नि, निर, यथा, यावत आदि उपसर्ग शब्द का बोध होता है

नोट : अव्ययीभाव समास में उपसर्ग होता है

उदाहरण:

Aajanm (आजन्म) - जन्म पर्यन्त

Yathavadhi (यथावधि) - अवधि के अनुसार

Yathakram (यथाक्रम) - क्रम के अनुसार

Bekasur (बेकसूर) -

Nidar (निडर) -

तत्पुरुष समास

इस समास में दूसरा पद (उत्तर पद / अंतिम पद) प्रधान होता है इसमें कर्ता और संबोधन कारक को छोड़कर शेष छ: कारक चिन्हों का प्रयोग होता है

जैसे - कर्म कारक, करण कारक, सम्प्रदान कारक, अपादान कारक, सम्बन्ध कारक, अधिकरण कारक

नोट : तत्पुरुष समास में कारक चिन्हों का प्रयोग होता है

उदाहरण :

Vidyalaya (विद्यालय) - विद्या के लिए आलय

Rajputra (राजपुत्र) - राजा का पुत्र

Munhtod (मुंहतोड़) - मुंह को तोड़ने वाला

Chidimar (चिड़ीमार) - चिड़िया को मारने वाला

Janmandh (जन्मांध) - जन्म से अँधा

द्विगु समास

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक होता है विग्रह करने पर समूह का बोध होता है

नोट : द्विगु समास में संख्या का बोध होता है

उदाहरण :

Trilok (त्रिलोक) - तीनो लोकों का समाहार

Navratra (नवरात्र) - नौ रात्रियों का समूह

Athanni (अठन्नी) - आठ आनो का समूह

Dusuti (दुसूती) - दो सुतों का समूह

Panchtatv (पंचतत्व) - पांच तत्वों का समूह

द्वंद्व समास

इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं। विग्रह करने पर बीच में 'और' / 'या' का बोध होता है

नोट : द्वंद्व समास में योजक चिन्ह (-) और 'या' का बोध होता है

उदाहरण :

Paap Punya (पाप-पुण्य) - पाप और पुण्य

Sita Ram (सीता-राम) - सीता और राम

Unch Neech (ऊँच-नीच) - ऊँच और नीच

Khara Khota (खरा-खोटा) - खरा या खोटा

Ann Jal (अन्न-जल) - अन्न और जल

कर्मधारय समास

इसमें समस्त पद सामान रूप से प्रधान होता है इसके लिंग, वचन भी सामान होते हैं इस समास में पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है विग्रह करने पर कोई नया शब्द नहीं बनता

नोट : कर्मधारय समास में व्यक्ति, वस्तु आदि की विशेषता का बोध होता है

उदाहरण :

Chandramukh (चन्द्रमुख) - चन्द्रमा के सामान मुख वाला - विशेषता

Dahi Vada (दहीवड़ा) - दही में डूबा बड़ा - विशेषता

Gurudev (गुरुदेव) - गुरु रूपी देव - विशेषता

Charan Kamal (चरण कमल) - कमल के समान चरण - विशेषता

Neel Gagan (नील गगन) - नीला है जो असमान - विशेषता

बहुव्रीहि समास

इस समास में कोई भी पद प्रधान न होकर अन्य पद प्रधान होता है विग्रह करने पर नया शब्द निकलता है पहला पद विशेषण नहीं होता है विग्रह करने पर समूह का बोध भी नहीं होता है

नोट : बहुव्रीहि समास के अंतर्गत शब्द का विग्रह करने पर नया शब्द बनता है या नया नाम सामने आता है

उदाहरण :

Trinetra (त्रिनेत्र) - भगवान शिव

Veenapani (वीणापाणी) - सरस्वती

Shwetambar (श्वेताम्बर) - सरस्वती

Gajanan (गजानन) - भगवान गणेश

Girdhar (गिरधर) - भगवान श्रीकृष्ण

'समास ' से संबंधित यूटूब लिंक्स

01 https://www.youtube.com/watch?v=BcLWWU9ZhGk

02 https://www.youtube.com/watch?v=ArxGs6Zy5Vk

03 https://www.youtube.com/watch?v=j40Y3IA8sbQ

04 https://www.youtube.com/watch?v=4O29DNiBC44

05 https://www.youtube.com/watch?v=p9cuEpC8P4k

06 https://www.youtube.com/watch?v=-_9I2Ku7Hww

विराम चिन्ह

विराम का अर्थ है ठहराव, विश्राम, रुकना। लिखते समय विराम को प्रकट करने के लिए लगाये जाने वाले चिन्ह को ही विराम चिन्ह कहते हैं।

उदाहरण : ताजमहल किसने बनवाया ? (प्रश्नवाचक)

उदाहरण : श्याम आया है ! (आश्चर्य का भाव)

विराम चिन्ह के प्रकार

विराम चिन्ह के मुख्य रूप निम्न प्रकार से हैं :

अल्प विराम (Comma) [,]

जहाँ थोड़ी सी देर रुकना पड़े, वहाँ अल्प विराम चिन्ह (Alp Viram) का प्रयोग करते हैं।

उदाहरण : नदी, पहाड़, खेत, हवा

उदाहरण : राम, सीता और लक्ष्मण जंगल गए।

अर्द्ध विराम (Semicolon) [;]

जहाँ अल्प विराम (Alp Viram) की अपेक्षा कुछ अधिक देर तक रुकना पड़े, वहाँ अर्द्ध विराम (Ardh Viram) का प्रयोग करते है।

उदाहरण : सूर्यास्त हो गया; लालिमा का स्थान कालिमा ने ले लिया।

उदाहरण : सूर्योदय हो गया; चिड़िया चहकने लगी और कमल खिल गए।

उप विराम (Colon) [:]

जब किसी कथन को अलग दिखाना हो तो वहाँ पर उप विराम (Up Viram) का प्रयोग करते हैं।

उदाहरण : प्रदूषण : एक अभिशाप ।

उदाहरण : विज्ञान : वरदान या अभिशाप ।

पूर्ण विराम (Full Stop) [।]

वाक्य के समाप्त होने पर पूर्ण विराम चिन्ह (Purn Viram) का प्रयोग करते हैं ।

उदाहरण : राम घर जाता है ।

उदाहरण : पेड़ से हमें फल प्राप्त होते हैं ।

प्रश्न चिन्ह (Question Mark) [?]

प्रश्न चिन्ह (Prashn Chinh) का प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में किया जाता है ।

उदाहरण : वह क्या लिख रहा है ?

उदाहरण : ताजमहल किसने बनवाया ?

विस्मयबोधक चिन्ह (Exclamation Mark) [!]

यह विस्मयादिबोधक चिन्ह (Vismahadibodhak Chinh) अव्यय शब्द के आगे लगाया जाता है ।

उदाहरण : हाय !, आह !, छि !, अरे !, शाबाश !

उदाहरण : हाय ! वह मारा गया ।

उदाहरण : आह ! कितना सुहावना मौसम है ।

निर्देशक चिन्ह (Dash) [–]

निर्देशक चिन्ह (Nirdeshak Chinh) का प्रयोग विषय, विवाद, सम्बन्धी, प्रत्येक शीर्षक के आगे, उदाहरण के पश्चात, कथोपकथन के नाम के आगे किया जाता है । इसको रेखा चिन्ह (Rekha Chinh) के नाम से भी जाना जाता है ।

उदाहरण : जैसे – अनार, आम, संतरा ।

उदाहरण : अध्यापक – तुम जा सकते हो ।

कोष्ठक चिन्ह (Bracket) [(),{},[]]

कोष्ठक चिन्ह (Koshthak Chinh) का प्रयोग अर्थ को और अधिक स्पस्ट करने के लिए शब्द अथवा वाक्यांश को कोष्ठक के अन्दर लिखकर किया जाता है ।

उदाहरण : विश्वामित्र (क्रोध में काँपते हुए) ठहर जा ।

उदाहरण : धर्मराज (युधिष्ठिर) सत्य और धर्म के संरक्षक थे ।

उद्धरण या अवतरण चिन्ह (Inverted Commas) [" "]

किसी कथन को ज्यों का त्यों उद्धृत करने के लिए उद्धरण या अवतरण चिन्ह (Uddharan or Avtaran Chinh) का प्रयोग करते हैं ।

उदाहरण : महा कवि तुलसीदास ने सत्य कहा है – "पराधीन सपनेहु सुख नाहीं" ।

उदाहरण : भारतेंदु जी ने कहा, "हिंदी, हिन्दू, हिंदुस्तान" ।

योजक चिन्ह (Hyphen) [-]

योजक चिन्ह (Yojak Chinh) का प्रयोग समस्त पदों के मध्य में किया जाता है ।

उदाहरण : सुख-दुःख, लाभ-हानि, दिन-रात, यश-अपयश, तन-मन-धन ।

उदाहरण : देश के दीवानों ने तन-मन-धन से देश की रक्षा के लिए प्रयत्न किया ।

लाघव चिन्ह (Sign of Abbreviation) [०]

किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने के लिए कुछ अंश लिखकर लाघव चिन्ह (Laghav Chinh) लगा दिया जाता है । इसको संक्षेपण चिन्ह (Sankshepan Chinh) भी कहते हैं ।

उदाहरण : उत्तर प्रदेश के लिए – उ० प्र० ।

उदाहरण : डॉक्टर के लिए – डॉ० ।

उदाहरण : इंजिनियर के लिए – इंजी० ।

विवरण चिन्ह (Sign of Following) [:-]

विवरण चिन्ह (Vivran Chinh) का प्रयोग वाक्यांश के विषयों में कुछ सूचक निर्देश आदि देने के लिए किया जाता है ।

उदाहरण : वनों से निम्न लाभ हैं :-

उदाहरण : इस देश में बड़ी - बड़ी नदियाँ हैं :-

विस्मरण चिन्ह या त्रुटिपूरक चिन्ह [^]

विस्मरण चिन्ह (Vismaran Chinh) का प्रयोग लिखते समय किसी शब्द को भूल जाने पर किया जाता है

उदाहरण : मैं पिताजी के साथ ^ गया ।

उदाहरण : हमें रोजाना अपना कार्य ^ चाहिए ।

पद्लोप चिन्ह (Mark of Ellipsis) [...]

उदाहरण : राम ने मोहन को गली दी ... ।

उदाहरण : मैं सामान उठा दूंगा पर ... ।

'विराम चिन्ह' से संबंधित यूटूब लिंक्स

01 https://www.youtube.com/watch?v=jtFPqdx-Vm8

02 https://www.youtube.com/watch?v=iI1julHS-sQ

03 https://www.youtube.com/watch?v=QVCPajlWYxI

04 https://www.youtube.com/watch?v=wlzhSFS2IFY

05 https://www.youtube.com/watch?v=jfkpQ9dqkDM

06 https://www.youtube.com/watch?v=WpKczRrAVRQ

मुहावरे

कोई भी ऐसा वाक्यांश जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे उसे मुहावरा कहते हैं।

कुछ प्रचलित मुहावरे

मुहावरे	अर्थ
अंग-अंग ढीला होना	बहुत थक जाना
आँख दिखाना	गुस्से से देखना
आँखों में धूल झोंकना	धोखा देना
कान भरना	चुगली करना
मुँह में पानी भर आना	दिल ललचाना
अँगूठा दिखाना	देने से साफ इनकार कर देना
ईद का चाँद	बहुत कम दीखना
नमक-मिर्च लगाना	बढ़ा-चढ़ाकर कहना
भीगी बिल्ली बनना	डर जाना
चिकना घड़ा होना	कुछ भी असर ना होना
घी के दिये जलाना	खुशी मनाना
चार चाँद लगाना	शोभा बढ़ाना

कान खड़े होना	चौकन्ना होना
कौए उड़ाना	घटिया काम करना
घी खिचड़ी होना	खूब मिल- जुल जाना
दाल न गलना	बस न चलना
अक्ल का दुश्मन	मूर्ख

अक्ल के घोड़े दौड़ाना	तरह-तरह के विचार करना
आँख चुराना	छिपना
कान कतरना	बहुत चतुर होना
कान पर जूँ तक न रेंगना	कुछ असर न होना
कानोंकान खबर न होना	बिलकुल पता न चलना
नाक में दम करना	बहुत तंग करना
मुँह की खाना	हार मानना
मुँह ताकना	दूसरे पर आश्रित होना
दाँत खट्टे करना	बुरी तरह हराना
गले का हार	बहुत प्यारा
हवा से बातें करना	बहुत तेज दौड़ना
पानी-पानी होना	लज्जित होना
आकाश से बातें करना	बहुत ऊँचा होना
खाक छानना	दर-दर भटकना
होश उड़ना	सुध-बुध खोना
हवा लगना	असर पड़ना
खून - चूसना	बहुत परेशान करना
आँख मारना	इशारा करना
गले का हार	बहुत प्रिय होना
ईद का चाँद	बहुत दिनों बाद दिखाई देना
मैदान छोड़ देना	हार मान लेना
हाथ सांफ करना	ठगना / माल मारना
आपे से बाहर होना	क्रोध से अपने वश में न रहना
मुँह में पानी आना	दिल/मन ललचाना

मुहावरे से संबंधित यूटूब लिंक्स

01 https://www.youtube.com/watch?v=9brLg8U7wnE

02 https://www.youtube.com/watch?v=eZsDJb5djpc

03 https://www.youtube.com/watch?v=_gF1i8nUVJQ

04 https://www.youtube.com/watch?v=ft8EYoKfH3M

05 https://www.youtube.com/watch?v=rRCuianETlg

हिंदी में पत्र लेखन- Letter Writing in Hindi

Hindi Patra Lekhan (हिन्दी पत्र लेखन)– किसी भी कागज या अन्य किसी चीज पर लिखा गया कोई भी समाचार पत्र कहलाता है। प्राचीन काल में खबरों का और एक दुसरे का कुशल मंगल जानने का एकमात्र साधन पत्र ही थे जिनसे जानकारी मिलने में बहुत समय लगता था। आज के तकनीकी युग में पत्रों का स्थान टेलीफॉन ,टैलिग्राम,फैक्स आदि ने ले लिया है और पत्रों का चलन खत्म हो गया है हालांकि अभी भी व्यवसाय,बैंक और सरकारी कार्यालयों आदि में पत्रों का प्रयोग किया जाता है। पत्र को अंग्रेजी में लैटर कहा जाता है।

पत्र लेखन के प्रकार (Types of Letters in Hindi)

हम अलग अलग लोगों को पत्र लिखते है और उसी के आधार पर पत्रों को विभाजित किया गया है–

1. औपचारिक पत्र

2.अनौपचारिक पत्र

औपचारिक पत्र *(Aupcharik Patra in Hindi)*– यह वह पत्र होते है जो हम किसी सरकारी, अर्धसरकारी, व्यवसाय आदि से जुड़े लोगो को लिखते है। इनकी भाषाशैली औपचारिक होती है और इनका स्वरूप भी निश्चित साँचे में ढला होता है। इसके अंतर्गत किसी सरकारी या गैर सरकारी विभाग को शिकायत पत्र,निमंत्रण पत्र, सुझाव पत्र आदि आते है।

अनौपचारिक पत्र *(Anaupcharik Patra in Hindi)*– यह पत्र उन लोगों को लिखे जाते है जिनसे हमारा घनिष्ठ संबंध होता है। यह परिवार वालों, रिश्तेदारों और मित्रों आदि को लिखे जाते है। इनकी भाषा बहुत ही सामान्य होती है। इन पत्रों को व्यक्तिगत पत्र भी कहा जाता है और इनका विषय भी निजी और घरेलू ही होता है।

पत्र के अंग- पत्र चाहे औपचारिक हो या अनौपचारिक दोनों के ही बहुत से अंग होते है-

1. पता तथा दिनांक

2.संबोधन और अभिवादन शब्दावली का प्रयोग

3. विषय सामग्री

4.पत्र समाप्ति,स्वनिर्देश और हस्ताक्षर

1. पता तथा दिनाक- पत्र के आरंभ में बाई और पर पत्र लिखने वाले का पता लिखा जाता है और उसके नीचे दिनांक लिखते है। औपचारिक पत्रों में दिनांक के नीचे जिसको पत्र भेज रहे है उनका भी पता लिखा जाता है।

2. संबोधन और अभिवादन शब्दावली- अपनी बातें लिखने से पहले हमें सामने वाले को किसी न किसी शब्द से संबोधित करना होता है। अनौपचारिक पत्रों में पूज्य ,नमस्कार आदि शब्द अपने से बड़ो के लिए प्रयोग किए जाते है और छोटो के लिए स्नेह,प्रिय आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है और इन संबोधन शब्दों के अंत में अल्प विराम लगाया जाता है। अनौपचारिक पत्रो में संबोधन के लिए महोदय ,मान्यवर आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है और संबोधन से पहले अपना विषय बताते है जिसके बारें में आपका पत्र है।

3. विषय सामग्री- इसमें हम अपने भाव और विचार लिखते है जो कि हम इस पत्र के माध्यम से व्यक्त करना चाहते है। हमारी लिखने की भाषा स्पष्ट और सरल होनी चाहिए।

4. पत्र समाप्ति और हस्ताक्षर- पत्र की समाप्ति सामने वाले की उमर और पद के अनुसार होती है। अगर हमसे बड़े है तो आपका आघ्याकारी, आपका विशवसनीय आदि शब्दों का प्रयोग कर सकते है और अगर छोटे का पत्र लिखा है तो तुम्हारा प्यारा जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। अंत में नाम और हस्ताक्षर किए जाते है। Hindi Letter Format

कुछ औपचारिक और अनौपचारिक पत्र लेखन उदाहरण *(पत्र लेखन नमूना) Letter Writing in Hindi-*

#Informal Letter in Hindi Format

1. अपनीपढ़ाईकीप्रगतिकेबारेमेंअपनीमाताकेनामपत्रलिखिए।

01- व्यक्तिगत पत्र

पिता को पत्र

दिनांक : 10.08.2020

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम ।

मैं यहाँ आपके आशीर्वाद से कुशल हूँ । आशा करता हूँ के आप भी वहाँ कुशल होंगे । आपका पत्र मिला, पढ़कर अत्यंत खुशी हुई । मेरी पढाई ठीक चल रही है । आपकी आज्ञानुसार मन लगाकर पढाई कर रहा हूँ ।

हमारी पाठशाला की ओर से अगले महीने दिनांक : 25.08.2020 से 28.08.19 तक शैक्षिक यात्रा का अयोजन किया गया है । उसमें मेरे सारे मित्र भी जा रहे हैं, उनके साथ मैं भी जाना चाहता हूँ । इसलिए मुझे यात्रा के लिए निर्धारित धनराशि 2000/- रुपए धनादेश में भेजने की कृपा करें ।
माता जी को मेर प्रणाम, तथा छोटे भाई को ढेर सारा प्यार ।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
अ. ब .क

सेवा में,
श्री आचार्य
डो. नं- 21, भरतनिवास
राजेश्वरी नगर, मुंबई

02 - व्यावहारिक पत्र

अपनी बहन की शादी के लिए चार दिनों की छुट्टी माँगते हुए अपने प्रधानाध्यपक के नाम एक छुट्टी पत्र लिखिए।

दिनांक : 10.08.2020

प्रेषक,
महबूब एम
नौं वीं कक्षा
सरकारि उच्च माध्यमिक शाला
बल्लारि - 583101

सेवा में,
प्राचार्य
सरकारि उच्च माध्यमिक शाला
बल्लारि – 583101

पूज्यगुरुजी,

विषय: छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र।

उपर्युक्त विषयानुसार आपसे सविनय निवेदन है कि मैं अपने बहन की शादी में शामिल होने के लिए बेंगलूरु जा रहा हूँ। इसलिए आप दिनांक 11-08-2018 से 14-08-2018 तक चार दिनों की छुट्टी देने की कृपा करें।

"धन्यवादकेसाथ"

आपका आज्ञाकारी छात्र
(महबूब एम)

पत्र लेखन से संबंधित यूटूब लिंक्स

01 https://www.youtube.com/watch?v=h31tMLeFtHs

02 https://www.youtube.com/watch?v=XAYu3g_6S9M

03 https://www.youtube.com/watch?v=fDhqGg8LNj4

04 https://www.youtube.com/watch?v=U0bsXKPG5AI

05 https://www.youtube.com/watch?v=gHt00BOjmfs

03.प्रमाण पत्र के लिए पत्र

दिनांक : 10.08.2020

प्रेषक,
महबूब एम
नौं वीं कक्षा
सरकारि उच्च माध्यमिक शाला
बल्लारि - 583101

सेवा में,
प्राचार्य
सरकारि उच्च माध्यमिक शाला
बल्लारि - 583101

विषय : प्रमाण पत्र हेतु विनती पत्र ।

आदरणीय महोदय,

उपर्युक्त विषय के संबंध में आप से निवेदन है कि, मेरे पिताजी का तबादला मैसूर में हो गया है । इसलिए उनके साथ मुझे भी जाना होगा ।

अतः आप से अनुरोध है कि, मुझे नौं वीं कक्षा उत्तीर्ण होने का प्रमाण पत्र, पाठशाला रिहाई का प्रमाण पत्र और चरित्र प्रमाण पत्र देने की कृपा करें ।

धन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी छात्र
महबूब एम

पत्र लिखते समय सावधानियाँ- आप का पत्र शिष्टतापूर्ण होना चाहिए। आपकी भाषा साफ और स्पष्ट होनी चाहिए जिससे कि पत्र के माध्यम से आप जो भाव व्यक्त करना चाहते हो वो सामने वाले को आसानी से समझ में आ सके। औपचारिक पत्रों की भाषा अच्छी होनी चाहिए और निश्चित रूप से होनी चाहिए। पत्रों का हमारे जीवन का एक अहम स्थान है। हमारे सभी सरकारी कार्यों में पत्रों का ही प्रयोग होता है क्योंकि यह हस्ताक्षर के साथ पक्के दस्तावेज होते है। हर किसी को अपनी जिंदगी में कभी न कभी पत्र तो लिखना ही पढ़ता है। पत्र हमें बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी बात व्यक्त करने का मौका देते है। हम सब को पत्र लेखन आना ही चाहिए।

निबंध

आजकल के समय में निबंध लिखना एक महत्वपूर्ण विषय बन चुका है, खासतौर से छात्रों के लिए। ऐसे कई अवसर आते हैं, जब आपको विभिन्न विषयों पर निबंधों की आवश्यकता होती है। निबंधों के इसी महत्व को ध्यान में रखते हुए हमने इन निबंधों को तैयार किया है।

निबंध से संबंधित यूट्यूब लिंक्स

01 https://www.youtube.com/watch?v=eJEn033Ga4I

02 https://www.youtube.com/watch?v=sNWYy_nIaP4

03 https://www.youtube.com/watch?v=nM6K0NFf7cE

04 https://www.youtube.com/watch?v=XSwSZpqiTW4

05 https://www.youtube.com/watch?v=eFNM6y_cpjY

06 https://www.youtube.com/watch?v=5gCotoRW3yI

07 https://www.youtube.com/watch?v=DE6vP1mMWNQ

08 https://www.youtube.com/watch?v=BeCbvus8HdM

09 https://www.youtube.com/watch?v=0fS8JMUzJpI

10 https://www.youtube.com/watch?v=hpsK8HwDzuQ

1.जनसंख्या की समस्या

प्रस्तावना / विषय प्रवेश :-

बढ़ती जनसंख्या की समस्या सामान्य रूप से विश्व की समस्या है । भारत को बढ़ती हुई जनसंख्या का सामना करना पड़ रहा है। दुनियाँ की 17% आबादी भारत में रहती है। जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व में दूसरे स्थान पर है|

जनसंख्या में वृद्धि के कारण :

विज्ञान की उन्नति के साथ चिकित्सा एवं स्वास्थ्य की सुविधाओं में उन्नति हुई है|
विभिन्न बीमारियों के लिए इलाज और उपचार शोध किये गये हैं। फलतः जन्म लेनेवाले शिशुओं और रोगियों की मृत्युदर में कमी हुई है तथा औसत आयु में वृद्धि हुई है। अशिक्षित और गरीब वर्ग के लोगों के अज्ञान के कारण जनसंख्या मेंवृद्धि |धार्मिक श्रद्धा के कारण जन्मनियंत्रण विधियोंऔर परिवार नियोजन विधियों को नहीं अपनाना |

जनसंख्या विस्फोट के दुष्परिणाम :

बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण देश की प्रगति कुंठित होती है |वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि और दिन-प्रतिदिन महंगाई बढ़रही है |बेकारी और बेरोज़गारी कीवजहसेअपराधोंमेंवृद्धिहुईहै | पर्यावरण प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हुई है |

भारत में जनसंख्या नियंत्रण के लिए उठाएगए कदम :

सरकारनेपुरुषोंकेलिएन्यूनतमविवाहयोग्यआयु 21वर्षऔरमहिलाओंकेलिए 18वर्ष तयकीहै |
दत्तक ग्रहण को बढ़ावा दिया गया है ,सरकार द्वारा बच्चों को गोदलेने को भी बढ़ावा दे दिया गयाहै |
सरकार तथा सामाजिक संस्थाओं ने सभाओं, गोष्टीओं, संचार माध्यमों द्वारा छोटे परिवार से होनेवाले फ़ायदे का प्रचार व प्रसार किया है|

उपसंहार :

भारत में बढ़ती जनसंख्या गंभीर चिंता का विषय है। हालांकि सरकार ने इस पर नियंत्रण रखने के लिए बहुत सारे कदम उठाए हैं ,लेकिन यह नियंत्रण पर्याप्त प्रभावी नहीं है। इस समस्या को रोकने के लिए कई अन्य उपाय किए जाने की आवश्यकता है।

2.इंटरनेट

विषय प्रवेश :-

आज का युग इंटरनेट युग है | बड़े बूढ़ों से लेकर छोटे बच्चों तक सब पर इस इन्टरनेट का असर पढ़ा है | इंटरनेट का अर्थ :- इंटरनेट अनगिनत कंप्यूटरों के कई अंतरजाल का एक दूसरे से संबंध स्थापित करने का जाल है|

इंटरनेट का महत्व एवं लाभ:-

इंटरनेट जीवन के हर क्षेत्र में अपना कमाल दिखाया है | चिकित्सा , कृषि, अंतरिक्ष ज्ञान , विज्ञान , शिक्षा और यहां तक कि देश के रक्षा दलो की कार्यवाही में इंटरनेट का बहुत बड़ा योगदान है|

इंटरनेट लाभ

इंटरनेट द्वारा घर बैठे बैठे खरीदारी कर सकते हैं| कोई भी विचार हो ,चित्र हो , या विषय हो कम समय में विश्व के किसी भी कोने में भेजना संभव होगया है | इंटरनेट द्वारा कोई भी बिल भर सकते हैं | इंटरनेट बैंकिंग द्वारा दुनियाँ की किसी भी जगह में चाहे जितनी भी रक़म भेजी जा सकती है | संचार और सूचना के क्षेत्र में प्रगति हुई है |

इंटरनेट के दुष्परिणाम /हानियाँ :-

इंटरनेट कीवजह से पैरेसी , बैंकिंग फ्रॉड , हैकिंग आदि बढ़ रही है ।
मुक्त वैबसाइट , चैटिंग आदि से युवा पीढ़ी बिगड़ रही है |
बच्चे अनावश्यक एवं अनुपयुक्त जानकारी हासिल कर रहे हैं |
समय को नष्ट कर रहे हैं |

उपसंहार :-

उपरयुक्त विषय को देखते हुये हम कह सकते हैं कि इंटरनेट एक ओर वरदान है तो दूसरी ओर अभिशाप भी है | हमें इंटरनेट का उपयोग वैध जरूरतों को या अच्छे ज्ञान को प्राप्त करने केलिए करना चाहिए ना कि अनावश्यक या अनुपयोगी जानकारी के लिए | बच्चों को अपनी निगरानी में इंटरनेट का उपयोग करने देना चाहिए |अगर ऐसा करेंगे तो इंटरनेट वरदान ही होगा |

सरकारी हाईस्कूल एस.आर.कालोनी बल्लारी 583101

कक्षा : 08वीं नैदानिक परीक्षा -2020 दिनांक :

****

I. खाली जगह भरिए :

1. अ,आ,----------अं,अ:
2. क,ख,ग,----------स,ह ।

II. चित्र देखकर शब्द लिखिए :

1.----------

2.----------

III .कन्नड या अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए :

1. मेरे पास एक उपाय है । 2. खूब पढ़ना मेरी जिम्मेदारी है ।

IV. याद करके लिखिए :

1.हमारा राष्ट्रीय पक्षी :---------- 2. हमारा राष्ट्रीय पुष्प :----------

3. हमारा राष्ट्रीय चिह्न :---------- 4. हमारा राष्ट्रीय प्राणी :----------

V. जोड़कर वाक्य बनाइए :

मैं	रोज़ सुबह जल्दी उठता	हैं।
ये	क्या कर रहा	हूँ।
तू	गुलाब के फूल	है।

VI. समानार्थक शब्द लिखिए : 1.पुस्तक 2. सवाल 3.पानी 4.दोस्त

VII. अन्य लिंग शब्द लिखिए : 1. लड़का 2.भाई 3.पिता 4.घोड़ी

VIII. वृत्तों से अक्षरों को चुनकर दो या तीन अक्षरों के शब्दों को लिखिए :

1.---------- 2.----------

ल	तो	का	ज
ड़	ग	क	र
म	मो	य	गा

IX. दिये गए व्यंजनों की बारखडी लिखिए:

च												
ढ												
व												

IX. खाली जगह भरकर सार्थक शब्द बनाइए :

1. स-- ल 2. क -- ल

सरकारी हाईस्कूल एस.आर.कालोनी बल्लारी 583101

कक्षा : 08 वीं साफल्य परीक्षा -2020 दिनांक :

****

I. खाली जगह भरिए :

1. क ,ख , ---------- भ, म ।

2. य,र ,----------ज्ञ श्र ।

II. चित्र देखकर शब्द लिखिए :

1.----------

2.----------

III .कन्नड या अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए :

1. मेरे पास एक उपाय है । 2. खूब पढ़ना मेरी जिम्मेदारी है ।

IV. याद करके लिखिए :

1.हमारा राष्ट्रीय पक्षी :---------- 2. हमारा राष्ट्रीय पुष्प :----------

3. क का कि :---------- 4. म मा मि :----------

V. जोड़कर वाक्य बनाइए :

हम	कर सकते	है।
वे	बाजार जाते	हैं।
तू	पाठ पढता	हूँ।

VI. समानार्थक शब्द लिखिए : 1.किताब 2. प्रश्न 3.शाम 4.मित्र

VII. अन्य लिंग शब्द लिखिए : 1. पिता 2.बहन 3.दादा 4.नानी

VIII. वृत्तों से अक्षरों को चुनकर दो या तीन अक्षरों के शब्दों को लिखिए :

1.---------- 2.----------

ल	तो	का	ज
ड़	ग	क	र
म	मो	य	गा

IX. दिये गए व्यंजनों की बारखडी लिखिए:

ट												
स												
ह												

IX. खाली जगह भरकर सार्थक शब्द बनाइए :

1. क-- ल 2. कि -- ब

सरकारी हाईस्कूल एस.आर.कालोनी बल्लारी 583101

कक्षा : 09वीं　　नैदानिक परीक्षा -2020　　दिनांक :

****

I. निम्न लिखित पक्षियों के नाम हिंदी में लिखिए ।

1. ಪಾರಿವಾಳ 2. ಕೋಳಿ 3.ಕಾಗೆ 4. ಆಕಳು 5. ನವಿಲು

II. संज्ञा के भेद बताइए ।

III . दूध से बनानेवाले पाँच खाद्य पदार्थों के नाम लिखिए ।

IV. प्रेरणार्थक क्रिया रूप लिखिए ।

1.चलना	----------	----------
2.लिखना	----------	----------
3.करना	----------	----------
4.बनना	----------	----------
5.पढ़ना	----------	----------

V. सर्वनामों को रेखांकित कीजिए :

1.आपका नाम क्या है ? 2.मैं गाँव जा रहा हूँ । 3. तुम कौन हो ? 4. हम आप के साथ चलेंगे । 5.वहाँ कौन खड़ा है ?

VI. समानार्थक शब्द लिखिए :

1.अग्नि 2. कनक 3.गुरु 4.पानी 5. पेड़

VII. मुहावरों का अर्थ लिखिए :

1. आग बबूला होना 2.नौ दो ग्यारह होना 3.बात का बतंगड़ करना 4.बाएँ हाथ का खेल 5. राई का पहाड़ करना

VIII. हिंदी में अनुवाद कीजिए :

1.ತಂದೆ-ತಾಯಿಯನ್ನು ಗೌರವಿಸಬೇಕು. 2.ನಾನು ಶಾಲೆಗೆ ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದೇನೆ. 3.ಮಕ್ಕಳು ಮೈದಾನದಲ್ಲಿ ಆಟವಾಡುತ್ತಿದ್ದರೆ. 4.ಜನರು ಬರೆಯುವುದನ್ನೇ ಮರೆತಿದ್ದಾರೆ. 5.ರಂಜಾನ್ ಮುಸಲ್ಮಾನರ ಪವಿತ್ರ ಹಬ್ಬ.

IX. मस किसी एक विषय के बारे में चार-पाँच वक्यों में लिखिए :

1.मकर संक्रांती　　2.बैसाखी　　3. क्रिसमस

X. कोई कारण बताते हुए अपने प्रधानाध्यापक के नाम पत्र लिखिए ;

सरकारी हाईस्कूल एस.आर.कालोनी बल्लारी 583101

कक्षा : 09वीं साफल्य परीक्षा -2020 दिनांक :

****

I. निम्न लिखित पक्षियों के नाम हिंदी में लिखिए ।

1. ಗಿಳಿ 2. ಗುಬ್ಬಿ 3.ಹದ್ದು 4. ಸಿಂಹ 5. ಹಾವು

II. सर्वनाम के भेद बताइए ।

III .दूध से बनानेवाले पाँच खाद्य पदार्थों के नाम लिखिए ।

IV. प्रेरणार्थक क्रिया रूप लिखिए ।

1. चढ़ना ---------- ----------
2. सीखना ---------- ----------
3. गिरना ---------- ----------
4. चढ़ना ---------- ----------
5. सुनना ---------- ----------

V. सर्वनामों को रेखांकित कीजिए :

1. आपका नाम क्या है ? 2. मैं गाँव जा रहा हूँ । 3. तुम कौन हो ? 4. हम आप के साथ चलेंगे ।
5. वहाँ कौन खड़ा है ?

VI. समानार्थक शब्द लिखिए :

1. जल 2. सोना 3.मित्र 4.हवा 5. वृक्ष

VII. मुहावरों का अर्थ लिखिए :

1. बालू से तेल निकालना 2.पसीना बहाना 3.बीडा उठाना 4.हिम्मत न हारना
5. राई का पहाड़ करना

VIII. मातृभाषा में अनुवाद कीजिए :

1. झूट के समान कोई पाप नहीं । 2. पंजाबी बैसाखी को नये साल का प्रारंभ मानते हैं ।.
3. उसके मालिक ने दो शर्तें रखी हैं ।. 4. लोग लिखना ही भूल गए हैं ।
5. राष्ट्ररक्षा करना सबसे बडा कर्तव्य है ।

IX. मस किसी एक विषय के बारे में चार-पाँच वक्यों में लिखिए :

1.मकर संक्रांती
2. बैसाखी
3. क्रिसमस

X. कोई कारण बताते हुए अपने प्रधानाध्यापक के नाम पत्र लिखिए ;

सरकारी हाईस्कूल एस.आर.कालोनी बल्लारी 583101

कक्षा : 10वीं　　नैदानिक परीक्षा -2020　　दिनांक :

****

I. सूचना के अनुसार लिखिए -

1.सफल शब्द का विलोम शब्द लिखिए । ----------

2.अध्यापक शब्द का अन्यलिंग रूप लिखिए। ----------

II.सही कारक चिन्ह चुनकर रिक्त स्थान भरिए – [का , के , ने ,को, से , में]

3. राम -------- रावण को मारा।

4.पेड ---------- पत्ता गिरा।

III.मुहावरों का अर्थ चुनकर लिखिए –

[अत्यंत क्रोधित होना , देने से इनकार करना , प्रभात होना , सबक सिखाना]

5. पानी पिलाना ----------।

6. आग बबूला होना ----------।

IV. प्रेरणार्थक क्रिया रूप लिखिए।

7. चलना ---------- ----------

8. लिखना ---------- ----------

V. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

09. विवेकानंद के माता – पिता का नाम क्या था ?

10 सामूहिक खेलों के उदाहरण लिखिए

VI. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –**

11. हमें कैसे रहना चाहिए ? 12. चंदन के पेड़ से कौन लिपटे रहता है ?

VII. **गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -**

भारत के इतिहास में स्वामी विवेकानंद का नाम अमर है। स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ते के एक कायस्त घराने में हुआ था। उनके बचपन का नाम नरेंद्र देव था।

प्रश्न :- 1. किसका नाम भारतीय इतिहास में अमर है ?

2. विवेकानंद के बचपन का नाम क्या था ?

VIII. निम्नलिखित कवितांश पूर्ण कीजिए।

जय-जय भारत ----------।

---------- भारत माता।

IX. **मातृभाषा में अनुवाद कीजिए –**

1.अंग्रेजी वर्णों का प्रभाव हमारे नामों पर हुआ है।.

2.जीवन में खेलों का स्तान बहुत महत्वपूर्ण है ।

X. **कोई कारण बताते हुए अपने प्रधानाध्यापक के नाम पत्र लिखिए ;**

सरकारी हाईस्कूल एस.आर.कालोनी बल्लारी 583101

कक्षा : 10वीं साफल्य परीक्षा -2020 दिनांक :

****

I. **सूचना के अनुसार लिखिए -**

1.आना शब्द का विलोम शब्द लिखिए । ----------

2. लड़का शब्द का अन्यलिंग रूप लिखिए। ----------

II.**सही कारक चिन्ह चुनकर रिक्त स्थान भरिए – [का , के , ने ,को, से , में]**

3. गीता -------- शम्मू को मारा।

4. घर ---------- माता है ।

III.मुहावरों का अर्थ चुनकर लिखिए –

[अत्यंत क्रोधित होना , बुरा होना , संकट में डालना , सबक सिखाना]

5. भाग्य फूटना ----------।

6. आग बबूला होना ---------- ।

IV. प्रेरणार्थक क्रिया रूप लिखिए।

7. देखना ---------- ----------

8. पढ़ना ---------- ----------

V. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

09. बहनने भाई को क्या खिला दिया ?

10 विवेकानंद ने किन-किन देशों की यात्रा की ?

VI. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –**

11. जय-जय भारत माता कविता के कवि कौन हैं ?

12. हेल्मेट के बिना कौन चलते हैं ?

VII. **गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -**

तिम्मक्का का जन्म तुमकूर जिला गुब्बी तालूका मे एक छोटे से गाँव कक्केनहल्ली मे हुआ। उनके पिता चिक्करंगय्या और माता का नाम विजयम्मा था।

क] तिम्मक्का का जन्म किस जिला में हुआ ?

ख] तिम्म्क्का के माता-पिता का नाम क्या है ?

VIII. निम्नलिखित कवितांश पूर्ण कीजिए।

तरुवर ----------

----------सुजान ॥

IX. **मातृभाषा में अनुवाद कीजिए –**

1. बच्चे नीम के पेड़ के तले खेलते थे।

2. बाबू भाई ने नारियल को पकड लिया।

X. **कोई कारण बताते हुए अपने प्रधानाध्यापक के नाम पत्र लिखिए ;**